Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

9.2

जिनी नायडू



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

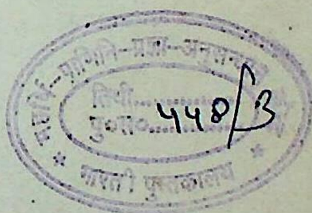
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ें और सीखें योजना

सरोजिनी नायडू

डॉ० माजदा असद

विभागीय सहयोग
हीरालाल बाछोतिया





राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्तूबर 1991

कार्तिका 1913

PD 15T-PM

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 1991

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय, या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

प्रकाशन सहयोग

सी. एन. राव : अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग

प्रभाकर द्विवेदी : मुख्य सम्पादक
पूरन मल : सम्पादक

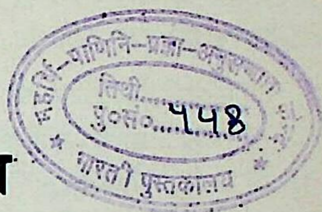
यू. प्रभाकर राव : मुख्य उत्पादन अधिकारी
सी.पी. टंडन : कला अधिकारी
डी. साई प्रसाद : उत्पादन अधिकारी
अमित श्रीवास्तव : वरिष्ठ कलाकार
सुबोध श्रीवास्तव : उत्पादन सहायक

मूल्य रु. 6.50

प्रकाशन विभाग से, सचिव राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, श्री अरबिंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा अरावली प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लिमिटेड, W-30, ओखला इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस-II, नई दिल्ली 110020 में मुद्रित।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्राक्कथन

विद्यालय शिक्षा के सभी स्तरों के लिए अच्छे शिक्षाक्रम, पाठ्यक्रमों और पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की दिशा में हमारी परिषद् पिछले लगभग तीस वर्षों से कार्य कर रही है। हमारे कार्य का प्रभाव भारत के सभी राज्यों और संघशासित प्रदेशों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पड़ा है, और इस पर परिषद् के कार्यकर्ता संतोष का अनुभव कर सकते हैं।

किन्तु हमने देखा है कि अच्छे पाठ्यक्रम और अच्छी पाठ्यपुस्तकों के बावजूद हमारे विद्यार्थियों की रुचि स्वतः पढ़ने की ओर अधिक नहीं बढ़ती। इसका एक मुख्य कारण अवश्य ही हमारी दूषित परीक्षा-प्रणाली है जिसमें पाठ्यपुस्तकों में दिए गए ज्ञान की ही परीक्षा ली जाती है। इस कारण बहुत ही कम विद्यालयों में कोर्स के बाहर की पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है लेकिन अतिरिक्त पठन में बच्चों की रुचि न होने का एक बड़ा कारण यह भी है कि विभिन्न आयुवर्ग के बच्चों के लिए कम मूल्य की अच्छी पुस्तकें पर्याप्त संख्या में उपलब्ध नहीं हैं। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में इस कमी को पूरा करने के लिए कुछ काम प्रारंभ हुआ है पर वह बहुत ही नाकाफ़ी है।

इस दृष्टि से परिषद् ने बच्चों की पुस्तकों के रूप में लेखन की दिशा में एक महत्त्वाकांक्षी योजना प्रारंभ की है। इसके अंतर्गत 'पढ़ें और सीखें' शीर्षक से एक पुस्तकमाला तैयार की जा रही है

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसमें विभिन्न आयुवर्ग के बच्चों के लिए सरल भाषा और रोचक शैली में निम्नलिखित विषयों पर बड़ी संख्या में पुस्तकें तैयार की जा रही हैं:

क. शिशुओं के लिए पुस्तकें
ख. कथा-साहित्य
ग. जीवनियाँ
घ. देश-विदेश परिचय
ङ. सांस्कृतिक विषय
च. वैज्ञानिक विषय
छ. सामाजिक विज्ञान के विषय

इन पुस्तकों के निर्माण में हम प्रसिद्ध लेखकों, अनुभवी अध्यापकों और योग्य कलाकारों का सहयोग ले रहे हैं। प्रत्येक पुस्तक के प्रारूप पर भाषा, शैली और विषय-विवेचन की दृष्टि से सामूहिक विचार करके अंतिम रूप दिया जाएगा।

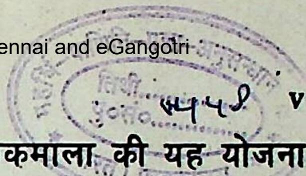
परिषद् इस माला की पुस्तकों को लागत-मूल्य पर ही प्रकाशित कर रही है ताकि वे अपने देश के सभी कोनों में पहुँच सकें। भविष्य में इन पुस्तकों का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराने की भी योजना है।

हम आशा करते हैं कि शिक्षाक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के क्षेत्र में किए गए कार्य की भाँति ही परिषद् की इस योजना का भी व्यापक स्वागत होगा।

प्रस्तुत पुस्तक 'सरोजिनी नायडू' के लेखन के लिए डॉ. माजदा असद ने हमारा निमंत्रण स्वीकार किया जिसके लिए हम उनके अत्यंत आभारी हैं। जिन-जिन विद्वानों, अध्यापकों और कलाकारों से इस पुस्तक को अंतिम रूप देने में हमें सहयोग मिला है उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हिन्दी में 'पढ़े और सीखें' पुस्तकमाला की यह योजना सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर अर्जुन देव के मार्ग-दर्शन में चल रही है। उनके सहयोगियों में श्रीमती संयुक्ता लूदरा, डॉ. रामजन्म शर्मा, डॉ. सुरेश पाण्डेय, डॉ. हीरालाल वाछोतिया और डॉ. अनिरुद्ध राय सक्रिय सहयोग दे रहे हैं। विज्ञान की पुस्तकों के लेखन में हमारे विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग के डॉ. रामदुलार शुक्ल सहयोग दे रहे हैं। योजना के संचालन में डॉ. वाछोतिया विशेष रूप से सक्रिय रहे हैं। मैं अपने सभी सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद और बधाई देता हूँ।

इस माला की पुस्तकों पर बच्चों, अध्यापकों और बच्चों के माता-पिता की प्रतिक्रिया का हम स्वागत करेंगे ताकि इन पुस्तकों को और भी उपयोगी बनाने में हमें सहयोग मिल सके।

के. गोपालन
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

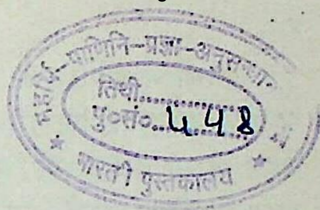
जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो. क. गांधी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भूमिका

भारत के राजनीतिक इतिहास में सरोजिनी नायडू का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। उनके समय में औरतों को बिल्कुल आज़ादी न थी। वे पुरुषों से अलग परदे में रहा करती थीं। अकेली कहीं आ जा नहीं सकती थीं। ऐसे समय में उन्होंने भारतीय राजनीति में पूरा सहयोग दिया। स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया। अपने जीवन को देश के लिए समर्पित कर दिया। संपन्नता और सुखवैभव को तिलांजलि देकर कठिनाइयों भरे कंटकमय मार्ग को अपनाया। तरह-तरह की परेशानियाँ सहन कीं। क्रांतिकारी विचारधारा, बलिदान और उच्च आदर्शों से देश को एकसूत्र में बाँधने का प्रयास किया। स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान किसी भी भारतीय पुरुष से कम नहीं अपितु अधिक ही है।

सरोजिनी नायडू उन महान क्रांतिकारी महिलाओं में से थीं जिन्होंने काव्य-प्रतिभा, भाषण-कला और अपने संपूर्ण क्रियाकलापों से यह सिद्ध कर दिया कि नारी किसी भी तरह पुरुष से कमतर या हीन नहीं है। वह चाहती थीं दुनिया को जगाना। अपनी आवाज जन-जन तक पहुँचाना। नयी चेतना जगाना। संभवतः इसीलिए सरोजिनी का जन्म-दिवस, 13 फरवरी, महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने नारीत्व को गरिमा प्रदान की। उनका हृदय उदारता, दया, ममता, स्नेह और करुणा से भरा हुआ था। वह एक सफल गृहणी थीं और साथ ही सफल नेता भी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों से सरोजिनी नायडू को बहुत प्यार था। उनके लिए उन्होंने कविताएँ लिखीं। बच्चों को देखकर वह कमल की तरह खिल जाया करती थीं। वह बच्चों के साथ बिलकुल बच्चों की तरह घुलमिल जातीं। उनके अनुसार बच्चे भावी देश का निर्माण करने वाले हैं।

सरोजिनी नायडू का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता था किंतु उनका मन सदा कुछ न कुछ करना चाहता था। वह अपनी धुन की पक्की और लगन की सच्ची थीं। जिस काम में लग जातीं उसे करके ही छोड़तीं। इसी भावना से उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और उस समय तक यह लड़ाई लड़ती रहीं जब तक कि उन्हें सफलता नहीं मिली। मानवता के कल्याण की मनोकामना उनमें थी। वह संसार को बदलना चाहती थीं। वह प्रायः सोचा करती थीं, मैंने संसार को बदलने के लिए क्या किया? इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने अनेक कविताएँ लिखीं। राष्ट्र-प्रेम उनकी कविताओं का विषय बना। यद्यपि उन्होंने अंग्रेजी भाषा में कविता की, किंतु उनकी कविताओं का विषय भारतीय मजदूर, किसान, कहार आदि होते। भारतीय वातावरण और जनजीवन उनमें पूरी तरह साकार होता। उनके काव्य की आत्मा पूरी तरह भारतीय थी।

सरोजिनी राष्ट्रीय एकता की अग्रदूत थीं। उन्होंने जीवन भर हिंदुओं और मुसलमानों में एकता स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने अनेक धर्मों को लेकर एकता स्थापित करते हुए कविता लिखी। वह विभिन्न संप्रदायों और धर्मों में एकता स्थापित करने का प्रयास करती रहीं। उन्होंने जात-पाँत के भेदभाव को स्वीकार न कर अंतर्जातीय विवाह किया। हर धर्म और जाति के लोग उनकी मित्र-मंडली में थे।

सरोजिनी नायडू का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा का धनी है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के लिए वह प्रेरणा का स्रोत है। उनके व्यक्तित्व से बच्चों को देशप्रेम, वीरता, साहस, दया, सहानुभूति, त्याग और बलिदान की प्रेरणा मिले, इसी बात को ध्यान में रखकर यह पुस्तक लिखी गयी है। इसमें उनके जीवन, उनके कार्यों और स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान का विवेचन है। आशा है बच्चों को यह पुस्तक पसंद आएगी।

डॉ० माजदा असद

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रमणिका

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1

पुरखे और परिवार

पूर्वी बंगाल में एक गांव है ब्रह्मनगर। उस गांव में एक चट्टोपाध्याय या चटर्जी परिवार रहता था। इस परिवार के पुरखे अरण्य मुनि थे। ये महान तपस्वी थे। बहुत बुद्धिमान और विद्वान भी थे। इनको प्रकृति से गहरा लगाव था। ब्रह्मनगर में बसने वाला यह एक गरीब परिवार था। बाद में यह परिवार हैदराबाद में बस गया।

किसे मालूम था कि इसी परिवार में एक ऐसी कन्या जन्म लेगी जिसका नाम सारी दुनिया में प्रसिद्ध होगा। यही महिला स्वतंत्र भारत में पहली महिला राज्यपाल बनेगी। उसकी मधुर संगीतमय वाणी संसार में गूँजती रहेगी। उसे भारत कोकिला की उपाधि मिलेगी। हर देश और जाति में अनेक महापुरुष जन्म लेते हैं लेकिन ऐसी महान महिला का जन्म विरले ही होता है। ऐसी महिला जिसने अपनी प्रतिभा, सूझबूझ, व्यक्तित्व, विचार और कर्म से आगे आने वाली पीढ़ियों को बहुत कुछ सिखाया। नया मार्ग दिखाया। उन्होंने देश को इतना कुछ दिया कि उनका नाम हम सदा सिर ऊंचा करके लेते रहेंगे। वह हमारे लिए एक धरोहर हैं, पूँजी हैं। हम उन पर गर्व करते रहेंगे। इतिहास में उनका नाम सदा अमर रहेगा। यह बालिका हैं सरोजिनी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरोजिनी का जन्म 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में हुआ। बाद में यही बालिका श्रीमती सरोजिनी नायडू स्वतंत्र भारत के उत्तर प्रदेश राज्य की प्रथम महिला राज्यपाल बनीं।

इस प्रतिभासंपन्न बालिका की कहानी बड़ी अनुपम है। यह कहानी हमें बताती है कि बालिका सरोजिनी में अदम्य विश्वास था। उनमें मानवता के प्रति प्रेम और आस्था थी। उसी के सहारे वह ऊँचे से ऊँचा पद पाती रहीं। गुण ही आदमी को महान बनाते हैं। कुछ गुण तो बच्चों को परिवार से मिलते हैं। कुछ आसपास के वातावरण से मिलते हैं। कुछ गुण समझदारी, अनुभव और ज्ञान से प्राप्त होते हैं। कुछ गुण व्यक्ति में जन्मजात और ईश्वर की देन होते हैं। बालिका सरोजिनी जिस घर में पैदा हुईं, जिस मिट्टी में खेली, जिस समाज में पली, बढ़ी और रही, वह कोई और नहीं यही है जिसमें आप और हम सब रहते हैं।

पूर्वज

बालिका सरोजिनी के पिता का संबंध ब्रह्मनगर के अरण्य मुनि परिवार से था। वह परिवार तपस्वियों और विद्वानों का परिवार था। सरोजिनी के पिता अघोरनाथ चट्टोपाध्याय को ज्ञान और कर्मठता अपने पुरखों से विरासत में मिली थी। उन्होंने अपने पूर्वजों के संस्कृत ज्ञान से बहुत कुछ सीखा था। आरंभ में अघोरनाथ को बहुत सी आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। वे एक निर्धन छात्र थे। उनके पास किताबें खरीदने के लिए पैसे नहीं होते थे। वे प्रायः किताबें उधार लिया करते थे और अपनी पढ़ाई का खर्च स्वयं उठाया करते थे। वे सड़क के किनारे लगी लालटेन की रोशनी में पढ़ा करते थे। उन दिनों आज की तरह बिजली की रोशनी घर-घर में सुलभ न थी।

अघोरनाथ का प्रिय विषय रसायनशास्त्र था। उसी के कारण वे बाद में उत्साही रसायनशास्त्री बन गए। वे अपनी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोगशाला में रात को देर तक प्रयोग करते रहते और नये-नये तथ्य खोजते रहते।

अघोरनाथ पढ़ने के लिए विदेश गए। गिलक्रिस्ट छात्रवृत्ति मिलने पर वे इंगलैंड चले गए। 1877 में उन्होंने एडिनबरा विश्वविद्यालय से भौतिकी में डाक्टर ऑफ साइंस की उपाधि प्राप्त की। इसी बीच उन्हें रसायन शास्त्र में बेक्सटर पुरस्कार और होप पुरस्कार भी मिले। विज्ञान में डाक्टरेट की उपाधि पाने वाले वे पहले भारतीय थे। इंग्लैंड से वे जर्मनी के बोन नगर में गए। वहाँ उनकी प्रतिभा और शोध को जर्मनी के विद्वानों ने भी माना। विदेश से लौटने पर वे विज्ञान की सेवा में न लगकर देश की सेवा में लग गए। इन्हें हैदराबाद बुला लिया गया। उन्होंने वहाँ अंग्रेजी माध्यम की एक पाठशाला स्थापित की। कुछ वर्षों बाद अघोरनाथ ने न्यू हैदराबाद कालेज की बुनियाद डाली। वे इसके संस्थापक थे और साथ ही प्रिंसिपल भी। बाद में यह कालेज निज़ाम कालेज के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उन्हें स्त्री-शिक्षा में गहरी दिलचस्पी थी। वे स्त्री-शिक्षा के प्रबल समर्थक और बड़े पक्षपाती थे। उस युग में स्त्री-शिक्षा की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। स्त्रियों के पढ़ने लिखने को अच्छा नहीं समझा जाता था। अघोरनाथ ने अपनी पत्नी और अपने मित्रों के सहयोग से एक महिला कालेज की स्थापना की।

न्यू हैदराबाद कालेज हैदराबाद का सांस्कृतिक केंद्र बन गया। जब कालेज की पढ़ाई या कक्षाएं समाप्त हो जातीं तो विद्यार्थी अघोरनाथ चट्टोपाध्याय के घर आ जाते। वे उनकी बातों को बड़े ध्यान से सुनते। वहां देश की सामाजिक समस्याओं, विशेषकर स्त्रियों की आजादी, उनकी आर्थिक स्वतंत्रता, बाल-विवाह, विधवा-विवाह और सामाजिक सुधारों पर खुलकर चर्चाएँ होतीं। ये चर्चाएँ विद्यार्थियों तक सीमित नहीं रहीं। उन चर्चाओं ने सभाओं का रूप ले लिया। हैदराबाद के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़े-लिखे और जागरूक लोग वहां आने लगे। उसे अघोरनाथ का दरबार कहा जाने लगा।

अघोरनाथ बाल-विवाह और जाति-प्रथा के विरोधी थे। उन्होंने हैदराबाद में बड़ी समाजसेवा की और समाज सुधार के काम को आगे बढ़ाया। उन्होंने राष्ट्रीय संगठन की स्थापना में सहायता दी। यह संगठन आगे चलकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कहलाया।

उन दिनों प्रथम श्रेणी में केवल अंग्रेज ही यात्रा कर सकते थे। अतः उन्हें रेल का प्रथम श्रेणी का टिकट भी नहीं खरीदने दिया गया। ग्यारह सैनिकों ने उन्हें जबरदस्ती रेलगाड़ी के दूसरे दरजे के डिब्बे में चढ़ाया। उस समय उन्होंने छोटा-सा भाषण दिया। यह ब्रिटिश सरकार के प्रति सज्जनता से भरा हुआ रोष था। इसे तत्कालीन सरकार और सामंतशाही के खिलाफ उठायी जाने वाली पहली विद्रोही आवाज कहा जा सकता है। राजनीति में भाग लेने के कारण अघोरनाथ को कालेज से निकाल दिया और उन्हें हैदराबाद भी छोड़ना पड़ा।

कुछ वर्षों के बाद डॉ० अघोरनाथ चट्टोपाध्याय को वापस निजाम कालेज बुला लिया गया। उन्होंने हैदराबाद में ब्रिटिश भारत विशेष-विवाह कानून लागू करने में सहयोग दिया। सन् 1885 से उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में सक्रिय भाग लिया।

अघोरनाथ बहुत हंसमुख और विनोदप्रिय थे। उनका व्यक्तित्व महान था। चरित्र उदार था। उनके मन में असत्य, अन्याय और अत्याचार के खिलाफ गहरा रोष था। वह मानव जाति को अज्ञान, दरिद्रता, शोषण और दमन से बचाने की हमेशा कोशिश करते रहे। देश-भक्ति उनकी रग-रग में समाई हुई थी। उन्हें भारत से बहुत प्यार था। वह भारत को आज़ाद कराना चाहते थे। ज्ञान-विज्ञान से उनका व्यक्तित्व ओत-प्रोत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। संस्कृत भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार था। पश्चिम के साहित्य को भी उन्होंने बड़ी दिलचस्पी से पढ़ा था। वे अंग्रेजी, हिंदी, फ्रेंच, जर्मन और रूसी भाषाएं जानते थे। भारतीय भाषाओं में बंगला, तेलुगु, हिंदी, उर्दू अच्छी तरह जानते थे। फरवरी 1915 में उनकी मृत्यु कलकत्ता में हुई। सरोजिनी उस समय हैदराबाद में थीं। उन्हें अपने पिता की मृत्यु के बारे में कुछ पता न था। अचानक उनका स्वर्गवास हो गया। उसी समय एक बूढ़ी भिखारिन उनके दरवाजे पर आई। वह चीख-चीख कर रोने लगी, "मैं तुम से भीख नहीं मांग रही हूँ। जो खुले हाथों दिया करता था-वह चला गया, चला गया, चला गया। थोड़ी ही देर बाद सरोजिनी को पिता के निधन का तार मिला। वह तुरंत कलकत्ता पहुंचीं। उन्होंने वहाँ जाकर देखा कि माँ असाधारण रूप से दु:खी और निस्तब्ध है। माँ ने उन्हें देखकर कहा "लो, तुम्हारे पिता तो जीवित हैं, तुम्हारी माँ मर गई है।"

माँ

ब्रह्मपुत्र नदी के सागर-संगम का विशेष महत्व है। कहा जाता है कि इसी संगम के पावन जल में अघोरनाथ ने 14 वर्ष की अवस्था में 9 वर्ष की एक छोटी-सी बालिका को नाव में बैठे हुए देखा था। उसी बालिका से बाद में अघोरनाथ की शादी हो गई। उस बालिका का नाम वरदासुंदरी था। यही बालिका सरोजिनी की मां बनी।

वरदासुंदरी प्रतिभा-संपन्न महिला थीं। केशवचंद्र सेन के ब्रह्म समाज आश्रम में रहकर उन्होंने बहुत कुछ सीखा था। वे एक आदर्श हिंदू नारी थीं। वे सवेरे से देर रात तक बड़ी निष्ठा और तत्परता के साथ घर के काम-काज में लगी रहतीं। सबकी सुख-सुविधा का उनको सदा ध्यान रहता। उनकी आंखों से करुणा, क्षमा और चिंतन छलकता था। वे सादगी को बहुत पसंद करती थीं और सादा जीवन बिताती थीं। इस आदत ने उन्हें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखावे और पाखंड से दूर रखा। परिवार ही उनका संसार था। वे अपने बच्चों की देखभाल में सदा लगी रहतीं। उन्हें गाने का बहुत शौक था। उन्होंने बंगला में कुछ गीत भी लिखे। गाते और गुनगुनाते समय कभी-कभी वे इतनी भाव-विभोर हो जातीं कि उनकी आंखों से आंसू बहने लगते।

वरदासुंदरी का घर महमानों से भरा रहता था। वे महमानों की सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखतीं। उनके लिए तरह-तरह के पकवान बनातीं। वे देशी, विदेशी, हिंदू, मुस्लिम, पाश्चात्य खाने और मजेदार मिठाइयां भी बनाया करतीं। ममतामयी मां की प्यार भरी छाया उनके बच्चों को तो मिली ही थी साथ ही वह हर आने-जाने वाले को अपने सद्व्यवहार और ममता से मोह लेतीं। नारी को ऊंचा उठाने के लिए, उसे समाज में उचित स्थान दिलाने के लिए उन्होंने बहुत कोशिश की। वह विधवा-विवाह की समर्थक थीं और बाल-विवाह की विरोधी। स्त्री-शिक्षा के लिए भी उन्होंने बहुत काम किये और हैदराबाद में स्त्री-शिक्षा को शुरू भी कराया।

भाई-बहन

डॉ० अघोरनाथ चट्टोपाध्याय और वरदासुंदरी देवी के आठ बच्चे थे। ये सभी बच्चे बड़े होनहार थे। हर बच्चा प्रतिभा से संपन्न था। हर एक ने किसी न किसी रूप में संसार में बहुत नाम कमाया। यह स्वाभाविक भी था। माता-पिता दोनों ही प्रतिभा-संपन्न और प्रगतिशील विचारों के थे। दोनों का प्रभाव बच्चों पर किसी न किसी रूप में पड़ा।

अपने बहन-भाइयों में सबसे बड़ी थीं सरोजिनी। उन्हें अपने बहन-भाइयों में सबसे ज्यादा प्रसिद्धि भी मिली। वीरेन्द्रनाथ का जन्म सन् 1880 ई. में हुआ। वे बचपन से ही बड़े क्रांतिकारी थे। उन्होंने कम्युनिस्ट नेता सुश्री एग्नेस स्मेडले से विवाह किया था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे जीवन भर उनकी संगिनी रहीं। वीरेन्द्रनाथ ने मुख्य रूप से जर्मनी में काम किया। वे साम्राज्यवाद विरोधी लोगों के साथ मिलकर काम करते थे। वे क्रांति के उग्र-पक्ष के नेता थे। उनकी इन गतिविधियों से नाराज होकर अंग्रेज सरकार ने उन्हें देश से निकाल दिया था। 2 दिसंबर, 1942 ई. को जर्मनी में उनकी मृत्यु हो गई।

दूसरे भाई भूपेन्द्रनाथ का जन्म 1882 में हुआ। वे हैदराबाद में सहायक महालेखा अधिकारी के पद पर रहे। बंबई में सन् 1933 ई. में उनकी मृत्यु हुई। मृणालिनी का जन्म 1833 में हुआ। मृणालिनी को प्यार में सब मुन्नू कहते थे। उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, लंदन से विज्ञान में आनर्स की परीक्षा पास की और वे प्राध्यापिका बन गईं। बाद में वे लाहौर गर्ल्स कालेज की प्रधानाचार्या बन गईं। उन्होंने विवाह नहीं किया। अपना सारा जीवन शिक्षा को समर्पित कर दिया। उनकी छात्राएं उन्हें बहुत प्यार करती थीं। उनकी मृत्यु 1969 ई. में हुई। सुनालिनी देवी का जन्म 1890 ई. में हुआ था। वे महान् नर्तकी कलाकार बनीं। उनका विवाह श्री राजम के साथ हुआ था। रणेन्द्रनाथ का जन्म 1895 ई. में और मृत्यु 1959 ई. में कैंसर के रोग से पीड़ित होने पर हुई। हरीन्द्रनाथ का जन्म 1898 में हुआ। यह कवि कलाकार और नाटककार थे। उनका विवाह कमलादेवी चट्टोपाध्याय के साथ हुआ था। उन्होंने अपना सारा जीवन भारत की परंपरागत कला और हस्तकौशल की उन्नति में लगा दिया। सुहासिनी का जन्म 1901 में हुआ। सुहासिनी अपने भाई वीरेन्द्रनाथ के समान ही अपने समय की एक बड़ी साम्यवादी नेता बनीं। उनका विवाह आर.एस. जाम्भेकर के साथ हुआ।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2

सरोजिनी का बचपन

सरोजिनी का बचपन भरे-पूरे परिवार में गुजरा। उनके माता-पिता दोनों ही हँसमुख स्वभाव के थे। उसका प्रभाव बचपन से ही सरोजिनी पर पड़ा। घर का वातावरण बहुत अच्छा था। सादगी को विशेष महत्व दिया जाता था। सरोजिनी को बचपन से ही सादा जीवन और उच्च विचारों की शिक्षा मिली। माँ की सादगी ने सरोजिनी को बहुत प्रभावित किया। बचपन से ऊंच-नीच का भेदभाव रखे बिना उन्होंने सबसे समान व्यवहार करना सीखा। उनका बचपन बहुत सक्रिय वातावरण में बीता। पिता रसायनशास्त्र के प्रयोग करते रहते। समाजसेवा का कार्य भी घर में चलता रहता। उनका बचपन ऐसे परिवार में बीता जहां जीवन में जय-पराजय दोनों ही थे, साथ ही चुनौतियों का सामना भी था।

सरोजिनी को बचपन से ही कई भाषाएं सुनने को मिलीं। उनके माता-पिता आपस में बंगाली में बात करते थे। बच्चों से घर में अंग्रेजी या हिंदुस्तानी और नौकरों से तेलुगु में बात करते। उनके भाई वीरेन्द्र 16 भाषाएं जानते थे। सरोजिनी को बचपन में अंग्रेजी सीखने की इच्छा नहीं थी। उनके पिता चाहते थे कि वह अच्छी अंग्रेजी सीखें। बचपन में सरोजिनी ने अंग्रेजी बोलने से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंकार कर दिया था। उनके पिता ने सरोजिनी को कमरे में बंद रखने की सजा दी। बालिका सरोजिनी ने इस सजा का स्वागत किया। उन्होंने पिता की आज्ञा मानने का निश्चय किया। केवल अंग्रेजी बोलना ही नहीं सीखा, उस भाषा में निपुण बनने का भी निश्चय किया। उन्होंने अपने निश्चय का इतना दृढ़तापूर्वक पालन किया कि अपने लेखन के लिए भी आगे चलकर इसी भाषा को अपनाया। सरोजिनी ने उर्दू और फ़ारसी भाषाएं भी सीखीं।

अपने सब बहन-भाइयों में सरोजिनी बड़ी थीं। इसलिए बचपन में छोटे बहन-भाइयों पर बहुत रौब जमाती थीं। परिवार के छोटे सदस्यों पर शासन करना उन्होंने अपना अधिकार मान लिया था। वे अपने छोटे बहन-भाइयों की जिम्मेदारी बचपन में ही बड़ों की तरह समझने लगी थीं।

सरोजिनी का बचपन बहुत आनंद और उल्लास में बीता। उनके माता-पिता से सभी धर्म, जाति और वर्ग के लोग मिलने आते। बच्चों पर किसी तरह की पाबंदी न थी। घरेलू वातावरण बहुत सहज और अच्छा था। सब लोग मित्रतापूर्वक रहते थे। सरोजिनी के बालमन पर इस वातावरण का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। उनके व्यक्तित्व का विकास बहुत सहज और स्वाभाविक ढंग से हुआ।

शिक्षा

सरोजिनी के पिता ने अपनी बेटी की प्रतिभा को बचपन से ही पहचान लिया था। उन्होंने उनकी पढ़ाई की तरफ विशेष ध्यान दिया। उस काल में लड़कियों को पढ़ाना बुरा समझा जाता था। उनकी शिक्षा की तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जाता था। स्थिति आज से बहुत भिन्न थी। न तो लड़कियों को स्कूल भेजा जाता और न ही घर पर पढ़ाया जाता था। सरोजिनी के पिता उदार विचारों के प्रगतिशील व्यक्ति थे। उन्होंने सरोजिनी और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने दूसरे बच्चों को पढ़ाने के लिए अध्यापिकाएँ घर पर बुलाईं। ये अंग्रेजी और फ्रेंच पढ़ाती थीं। फारसी का अध्ययन भी सरोजिनी ने किया।

सरोजिनी के पिता चाहते थे कि उनकी यह प्रतिभावान बेटी विज्ञान या गणित में विशेष योग्यता प्राप्त करे। सरोजिनी की रुचि गणित में बिल्कुल नहीं थी। एक बार की घटना है जब वे ग्यारह वर्ष की थीं। बीजगणित के प्रश्न करते समय वे एक प्रश्न पर अटक गयीं। बहुत कोशिश की लेकिन वह सवाल समझ में न आया। किसी भी तरह उसका उत्तर न निकाल सकीं। उस समय उन्हें एक कविता सूझ गयी। उस कविता को उन्होंने लिख डाला। उसी दिन से काव्य के प्रति रुचि बढ़ी और सरोजिनी कविताएं लिखने लगीं।

हैदराबाद में उस समय कोई हाईस्कूल नहीं था। सरोजिनी को पढ़ने कहां भेजा जाये, यह प्रश्न परिवार के सामने आया। उनके पिता ने उन्हें अध्ययन करने के लिए मद्रास भेज दिया। सरोजिनी पढ़ने लिखने में बहुत तेज थीं। उन्होंने तीन वर्ष का कोर्स एक ही वर्ष में पूरा कर लिया। उन्होंने बारह वर्ष की आयु में 1891 ई. में प्रथम श्रेणी में हाईस्कूल की परीक्षा पास की। वे पूरे मद्रास विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली पहली छात्रा थीं। उस समय किसी लड़की का इस प्रकार सफलता प्राप्त करना बड़े आश्चर्य की बात थी। उन दिनों मद्रास विश्वविद्यालय का क्षेत्र बहुत बड़ा था। अधिकांश दक्षिण-भारत उस विश्वविद्यालय के अंतर्गत आ जाता था। उनकी इस सफलता पर सारे देश में उनके यश का गान हुआ और बहुत खुशी मनाई गई।

हाई स्कूल की परीक्षा पास करने के बाद सरोजिनी हैदराबाद आ गईं। तीन वर्ष तक वे अपने माता-पिता के पास घर पर ही रहीं। ये वर्ष बहुत अच्छे और आनंदोल्लास में बीते। उनका

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक समय अध्ययन करने और पढ़ने-लिखने में बीतता। कविता और उपन्यास लिखने में वे अधिक रुचि लेने लगीं। उसके बाद उन्होंने गीत लिखने शुरू कर दिए। हाईस्कूल की परीक्षा पास करने के बाद सरोजिनी ने अध्ययन तो बहुत किया किंतु वे किसी परीक्षा में सम्मिलित नहीं हुईं। सरोजिनी बहुत विचारशील बालिका थीं। बचपन से उन्हें विद्वतापूर्ण वातावरण मिला था। चौदह वर्ष की अवस्था तक पहुंचते-पहुंचते उन्होंने अंग्रेजी के सभी प्रसिद्ध कवियों की रचनाओं का अध्ययन कर लिया था। ब्राउनिंग, शैली और टेनीसन उन्हें बहुत प्रिय थे।

घर में होने वाली परिचर्चाओं में वे शामिल होती थीं। बच्चों को ज्ञान-विज्ञान की चर्चाओं में भाग लेने की आजादी थी। दर्शन, विज्ञान, वनस्पतिशास्त्र, कीमियागिरी, गणित और राजनीति उनके दैनिक जीवन का हिस्सा बन गए थे। घर पर ही उन्हें हर तरह का ज्ञान सुलभ था जिसने उनकी प्रतिभा को और निखारा और उनके ज्ञान को सामान्य बालक के ज्ञान से आगे बढ़ा दिया। सबसे अधिक अध्ययन सरोजिनी ने चौदह वर्ष से लेकर सोलह वर्ष की आयु तक किया।

सरोजिनी लंदन में

हैदराबाद के निज़ाम सरोजिनी की प्रतिभा और लेखन से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने सरोजिनी को उच्च अध्ययन के लिए वजीफा (वेलकम स्कालरशिप) देकर 1895 में इंगलैंड भेज दिया। आने-जाने के किराये के अतिरिक्त 300 पौंड प्रतिवर्ष खर्च के लिए उन्हें दिए गए।

सोलह वर्ष की अल्पायु में बालिका सरोजिनी ने श्रीमती एनीबीसेंट के साथ यह पहली समुद्री यात्रा की। यह यात्रा उनके असाधारण कार्यों का प्रारंभिक रूप थी। इंगलैंड में उन्हें कुमारी मेनिंग का संरक्षण मिला। उन्होंने लंदन में भारतीय विद्यार्थियों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए बहुत काम किया। वहीं सरोजिनी की भेंट एडमंड गास से हुई जिन्होंने उन्हें कवयित्री बनने की प्रेरणा दी। लंदन के सांस्कृतिक वातावरण में सरोजिनी को महत्वपूर्ण स्थान मिला। उनके पास अपार ज्ञान राशि थी। उसके कारण वह सबके आकर्षण का केंद्र बन गईं।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने के लिए सरोजिनी की आयु कम थी। उन्होंने प्रारंभ में गर्टन कालेज में प्रवेश प्राप्त किया। बाद में उन्हें कैम्ब्रिज में प्रवेश मिल गया। दो वर्ष बाद वह गर्टन कालेज में पढ़ने के लिए गईं।

सरोजिनी ने लंदन में अध्ययन तो बहुत किया किंतु कोई शैक्षणिक योग्यता या डिग्री नहीं प्राप्त की। ऐसा प्रतीत होता है कि डिग्री प्राप्त करने की उन्हें कोई इच्छा नहीं थी। कैम्ब्रिज में वे कक्षा में बहुत कम जातीं। वे आसपास के प्राकृतिक रम्य स्थलों में अपना समय अधिक व्यतीत करतीं। विश्वविद्यालय का अनुशासन उन्हें जीवन के विकास और कविता के लिए निरर्थक लगता।

लंदन पहुंचाने के बाद सरोजिनी ने अपनी प्रतिभा और अपने असाधारण व्यक्तित्व से वहां के पढ़े-लिखे समाज को आश्चर्य में डाल दिया। वे मानसिक रूप से परिपक्व थीं। उनका अध्ययन विस्तृत था। वे किसी भी पश्चिमी बाला की अपेक्षा अधिक सजग और स्वाध्यायी थीं। उनके ज्ञान का भंडार अपार था। उन्होंने विक्टोरियन बैठकों में अपने ज्ञान से तहलका मचा दिया। उनका व्यक्तित्व अब तक पूर्ण रूप से विकसित हो गया था। वह साहित्य समालोचक एड़मंड गास की मित्र बन गई थीं। प्रायः एड़मंड के घर भी वह जाया करती थीं।

उनकी भेंट ''इब्सन'' नाटककार को प्रसिद्धि दिलाने वाले प्रसिद्ध साहित्यकार विलियम आर्चर से हुई। उनकी भेंट हाइनमान से हुई। वे बाद में उनके प्रकाशक भी बन गए।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्यपि लंदनवास काल में सरोजिनी का स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं रहा तथापि शरीर की दुर्बलता उनके चिंतन की एकाग्रता को भंग न कर सकी। कल्पनालोक से काव्य के मानक-मोती वह सदा बटोरती रहतीं। साइमंस से भी सरोजिनी की भेंट हुई। वह उच्च कोटि के साहित्यकार और समालोचक थे। साइमंस सरोजिनी से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने सरोजिनी की प्रतिभा को महसूस किया और उनके व्यक्तित्व को पहचाना था।

एडमंड गास ने कल्पना लोक में विचरण करने वाली सरोजिनी को यथार्थ जीवन की तरफ मोड़ा। वे अपनी कविताएं एडमंड गास को दिखातीं। गास उनको परखते और उनकी कमियों को बताते। गास ने ही उनसे कहा कि वह अपने देश को अपनी कविता का विषय बनाकर नए सिरे से काव्य रचना करें। सरोजिनी ने उनकी बात को माना। एडमंड गास एक तरह से सरोजिनी के काव्य-गुरु थे।

इंगलैंड के जीवन का उनके व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने निश्चय कर लिया कि वह अपनी कविता के लिए अंग्रेजी भाषा को ही माध्यम बनाएँगी। इंगलैंड में उन्होंने बहुत कुछ सीखा। वहाँ के साहित्यकारों के अनुभव और सुझावों ने उन्हें नई राह दिखलाई। उनका व्यक्तित्व वहाँ अधिक निखर उठा।

विदेश से वापसी

लगभग तीन वर्ष इंगलैंड में रहने के बाद सरोजिनी सितंबर, 1898 में वापस घर आईं। उन्होंने तीन वर्ष के अध्ययन के बाद इंगलैंड में कोई डिग्री प्राप्त नहीं की। एक तरह से उनके शैक्षणिक जीवन को विफल माना जा सकता है। घर से दूर रह कर सरोजिनी ने भले ही कोई डिग्री प्राप्त न की हो किंतु उन्होंने अनुभव बहुत प्राप्त किया। वहाँ के साहित्यिक जगत से बहुत कुछ सीखा। उनकी काव्य प्रतिभा वहाँ रहकर पूरी तरह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकसित हो गई। इंगलैंड में बिताए गए समय का गहरा प्रभाव उन पर पड़ा। साथ ही विदेशी विषयों पर लिखने का विचार भी उन्होंने छोड़ दिया। घर लौट आने के बाद उन्होंने पश्चिम के लिए भारत को अपनी कविता का विषय बनाया। विशेष रूप से हैदराबाद के हिंदू-मुस्लिम जीवन के वातावरण को अपनी कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत किया। विदेश में रहकर उनके मन में देश प्रेम और राष्ट्रोत्थान की भावना को और अधिक बढ़ावा मिला। सरोजिनी को इंगलैंड में अपना घर और अपना देश बहुत याद आता। उस व्यक्ति की भी प्रायः याद आती जिससे वह प्रेम करने लगी थीं। संभवतः इसीलिए वह उन दिनों बहुत अस्वस्थ हो गईं। उन्हें स्वास्थ्य-लाभ के लिए स्वीट्ज़रलैंड और इटली जाना पड़ा। इटलीवास का प्रभाव सरोजिनी पर बहुत अधिक पड़ा। इटली के संबंध में उनके मन में यह प्रश्न भी उठा, "यह मनुष्यों का देश है या देवताओं का?" इटली यात्रा ने सरोजिनी में देशभक्ति की भावना को बहुत अधिक बढ़ावा दिया।

* * *

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3

विवाह—जीवन में नया मोड़

अघोरनाथ चट्टोपाध्याय का घर साहित्यिक और राष्ट्रीय चर्चाओं के लिए प्रसिद्ध था। यहीं सरोजिनी नायडू की भेंट डा० गोविन्दराजुलु नायडू से हुई। डा० गोविन्दराजुलु नायडू चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन करके एडिनबरा (इंगलैंड) से लौटे थे। सरोजिनी के मन में उनके प्रति प्रेम जागृत हो उठा। इसका परिचय सरोजिनी की प्रेम के संबंध में लिखी हुई शुरू की बहुत-सी रचनाओं में मिलता है। उन्होंने डा० नायडू के प्रेम में लीन होकर अनेक कविताओं की रचना की। प्रारंभ में सरोजिनी नायडू के इस प्रकार के प्रस्ताव को उनकी भावुकता समझा गया। उनके माता-पिता आरंभ में इस विवाह के लिए तैयार नहीं थे। डा० नायडू के साथ विवाह की अनुमति न देने का मुख्य कारण यह रहा होगा कि उस समय वह केवल सोलह वर्ष की थीं और अघोरनाथ बाल-विवाह के विरोधी थे। दूसरी वजह यह भी हो सकती है कि डा० नायडू विधुर थे और सरोजिनी से दस वर्ष बड़े थे। वह छोटी जाति के भी थे। अघोरनाथ का ब्राह्मण परिवार था। इंगलैंड से लौट आने पर सरोजिनी ने फिर अपनी बात माता-पिता के सामने रखी। उन्हें इस विवाह की अनुमति दे दी गई जिसके लिए अघोरनाथ ने तीन वर्ष पहले मना कर दिया था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अघोरनाथ के खिलाफ यह भी कहा गया कि वह अंतर्जातीय विवाह के विरोधी हैं, जबकि अघोरनाथ बड़े उत्साही सुधारक थे। वह जाति भेद-भाव का विरोध करते थे। सन् 1898 में जब सरोजिनी विदेश से लौटकर आईं तो उस समय डा० नायडू महामहिम निजाम की शाही-सेना की चिकित्सा सेवा के अध्यक्ष थे। उन्हें मेजर का पद दिया जा चुका था। यहाँ आने के बाद उन्होंने डा० नायडू से विवाह करना चाहा, क्योंकि उनके विवाह से भारत में बहुत से सुधारों के लिए रास्ता खुल जाने की संभावना थी। उन्होंने अंतर्जातीय और अंतर्प्रांतीय भावनाओं को पूरी तरह समाप्त करना चाहा। 1872 में एक विशेष विवाह कानून पास हुआ। इस कानून के अंतर्गत होने वाला पहला विवाह सरोजिनी का था। यह विवाह मद्रास में 2 दिसंबर 1898 को हुआ। कुमारी सरोजिनी चट्टोपाध्याय श्रीमती सरोजिनी नायडू बन गईं। भारतीय समाचार पत्रों ने इस विवाह की सूचना दी। इस विवाह में श्रीमती राजा राममोहन राय सरोजिनी की सहेली बनीं। श्री एस० सोमसुन्दरम पिल्लैई द्वारा एक प्रार्थना के बाद विवाह-संबंध संस्कार पूरे किए गए। नायडू के गुरु राव बहादुर वीरशलिंगम पंतुलु ने इस अवसर पर पुरोहित का काम किया। उनके द्वारा जीवन की जिम्मेदारियों के संबंध में वर-वधू को उपदेश दिए गए। बाद में डा० अघोरनाथ चट्टोपाध्याय ने कन्यादान किया और दोनों को विधिवत विवाह के पवित्र बंधन में बांध दिया। यह विवाह श्री एफ० डी० वर्ड, मद्रास नगर के विवाह पंजीयक की उपस्थिति में हुआ। सरोजिनी और उनके पति को उस समय के प्रमुख दक्षिण भारतीय समाज सुधारक पंडित वीरशलिंगम पंतुलु जैसे महान गुरु का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। इस अवसर पर सरोजिनी की मां ने हैदराबाद लौटकर विवाह उत्सव मनाने के लिए एक आयोजन किया जिसमें बहुत से लोगों को बुलाया गया। पर्दे वाली औरतों के लिए विशेष प्रबंध था। हैदराबाद के शाही वातावरण में एक बड़े स्वागत समारोह का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयोजन किया गया। इस अवसर पर गाना गाने वाली औरतों ने तत्कालीन शासक निज़ाम की ग़ज़लों में से कुछ चुनी हुई सुंदर ग़ज़लें सुनाईं।

बच्चे

विवाह के पश्चात सरोजिनी नायडू हैदराबाद के एक किराये के मकान में रहने लगीं। वे एक पत्नी के रूप में सुखपूर्वक जीवन बिताने लगीं। उस महान कवयित्री ने अपने आपको सामान्य औरत की तरह जीना सिखा लिया। सन् 1901 में उनके पहले बच्चे जय सूर्य का जन्म हुआ और उसके बाद अगले वर्षों में पद्मजा, रणधीर और लीलामणि का। सरोजिनी का घर हैदराबाद में बहुत प्रसिद्ध था। उस घर के द्वार मित्रों और मेहमानों के लिए सदा खुले रहते थे। सरोजिनी के जीवन का यह समय बड़े आनंद और उल्लास के साथ बीता। उन्होंने अपने बच्चों की हंसी और ममता से अपने जीवन को भरा-पूरा बनाया। उन दिनों सरोजिनी बहुत प्रसन्न और अपने आपको हल्का-फुल्का अनुभव करती थीं।

व्यंग्य विनोद से उनका घर हर समय भरा होता था। अच्छी-अच्छी मजेदार बातें और कहानियां भी खूब सुनाई जातीं। हर घटना को इस तरह नमक-मिर्च लगा कर सुनाया जाता कि वह बहुत मनोरंजक बन जाती। यह सरोजिनी नायडू के जीवन का सुनहरा काल था। इस काल में उन्होंने बहुत आनंद प्राप्त किया और आगे चलकर उसे अपने काव्य-जगत के साथ जोड़ लिया।

बच्चों पर कविता

सरोजिनी नायडू को अपने पति से बहुत प्रेम था। उनके प्रेम में लीन होकर उन्होंने अनेक कविताएं लिखीं। उनकी ममता उन कविताओं में झलकती है जो उन्होंने अपने बच्चों पर लिखीं। वे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविताएं बहुत सुंदर और दिल को छूने वाली हैं। इन कविताओं में वे अपने बच्चों के लिए सभी प्रकार के सुख, हर्षोल्लास और सफलता की कामना करती हैं। आठ-आठ पंक्तियों में हर बच्चे पर लिखी गई कविताओं में उन्होंने बच्चों के गुणों का वर्णन किया है। उन गुणों का आभास उन्हें बच्चों के बहुत छोटेपन में ही हो गया था। उन्होंने ये कविताएं अपने चार वर्ष के बेटे सूर्य, तीन वर्ष की बेटी पद्मजा, दो वर्ष के रणधीर और एक वर्ष की लीलामणि को लेकर लिखी थीं। जयसूर्य के संबंध में उन्होंने कहा—

मेरे जीवन के मेघहीन निर्मल प्रभात में,
उदय हुआ है स्वर्णिम सूर्य विजय का।

उनकी मनोकामना है कि वह बेटा 'बनेगा सूर्य गीतों का, और मुक्ति का।' पद्मजा के संबंध में वह कहती हैं—'बनो तुम पद्मकामिनी, संपूर्ण तन्मयता की सुवास।' रणधीर के संबंध में उनका कथन है—'रण-देव बनो तुम देवस्नेह और शौर्य के'। लीलामणि के विषय में वह कहती हैं—'मूर्तिमंत मणि, बनो तुम हास-पुंज और मुक्त रहो पीड़ा से'।

पशु-पक्षी

सरोजिनी के इस परिवार में बच्चों के अतिरिक्त पशु-पक्षी भी थे। घोड़े और एक छोटी दो पहियों की गाड़ी थी। बिल्लियाँ और चिड़ियाँ भी उन्होंने पाली हुई थीं जिन्हें निकोलस, निकोबर, डिक्डिक्, महजोंग और लेडी लिका ल्युपिन जैसे अटपटे नाम दिए गए थे। उनके यहाँ कुछ समय के लिए एक चीता और शेर के दो बच्चे भी पाले गए थे। इन पशु पक्षियों से सरोजिनी बहुत प्यार करती थीं।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4

काव्य लेखन

सरोजिनी बचपन से कल्पना में खोई रहती थीं। अनेक विचार उनके मन में उठते रहते। भरे-पूरे परिवार में होते हुए भी कभी-कभी वह अपने आप को अकेला कल्पनालोक में लीन पातीं। पिता की इच्छा थी कि बालिका सरोजिनी बहुत बड़ी वैज्ञानिक बनें। ईश्वर की इच्छा थी कि वह कवयित्री बनें। ग्यारह वर्ष की आयु में वे एक बार बीजगणित का प्रश्न कर रही थीं। बार-बार कोशिश करने पर भी सवाल हल न हो सका। कविता सूझने लगी। उन्होंने सवाल छोड़ दिया। कविता लिखने लगीं। बस उसी दिन से कवि जीवन आरंभ हो गया। तेरह वर्ष की आयु में सरोजिनी ने एक बहुत लंबी कविता लिखी, जिसका नाम था 'लेडी आफ द लेक'। तेरह सौ पंक्तियों की यह कविता छः दिन में लिखी गई।

उसी वर्ष उन्होंने दो हजार पंक्तियों का एक नाटक लिखा। यह नाटक उनकी तीव्र भावनाओं का फल था जिसके विषय में उन्होंने पहले से कुछ सोचा विचारा नहीं था। यह एक तरह की प्रतिक्रिया भी थी। उनको डाक्टर ने पूरी तरह आराम करने के लिए कहा था और पढ़ने-लिखने, यहां तक कि किताब छूने तक के लिए मना कर दिया था। ऐसी हालत में उन्होंने नाटक लिख

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाला। उनका नियमित अध्ययन बंद हो गया। इस क्षति को पूरा करने के लिए उन्होंने बाद में बहुत अध्ययन किया। इस समय उनकी अवस्था चौदह से सोलह वर्ष थी। उन्होंने इसी काल में एक उपन्यास भी लिखा और बहुत से डायरियों के पन्ने भी। उस खेल-कूद की अवस्था में भी वह पूरी तरह गंभीर हो चुकी थीं।

काव्य के इस प्रारंभिक काल में सरोजिनी का मन पूरी तरह उत्साह से भरपूर था। उसका परिचय उनके काव्य में भी मिलता है। नवंबर 1894 में उन्होंने 'लव' प्रेम शीर्षक से एक गीत लिखा जिसमें कोमल भावों की अभिव्यक्ति मिलती है।

मैं तुसमे प्यार करती हूँ उस ममत्व से
जिसका रूप अपरिवर्तनीय है।
रात के सितारों की तरह।
मेरा प्रेम कहीं अधिक सशक्त है मृत्यु से,
मेरा प्रेम ऊषा की प्रभा जैसा निर्मल है।
मैं यह जानने को उत्सुक नहीं हूँ
कि तुम मुझसे प्रेम करते हो या नहीं,
मेरे लिए इतना काफी है कि तुम हो श्रेष्ठतम प्रियतंम सर्वोत्तम
तुम्हें सौंपती हूं अपने हृदय की निधिया।

यह कविता उन्होंने अपने होने वाले पति के प्रेम में लीन होकर लिखी, जिन्हें वह अपने हृदय की निधियां सौंप चुकी थीं।

उन्होंने एक छोटा सा फारसी नाटक–'मोहर मुनीर' लिखा। यह नाटक हैदराबाद की स्थानीय पत्रिका में छपा। इस नाटकं की कुछ अंग्रेजी प्रतियां उनके पिता ने अपने मित्रों को भेजीं। हैदराबाद के नवाब निज़ाम के पास भीं इस नाटक की एक प्रति भेजी गई। निज़ाम सरोजिनी की प्रतिभा और कवि रूप से परिचित थे। उन्होंने सरोजिनी को प्रोत्साहित करने के लिए कहा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि सरोजिनी खुद बताएँ कि वह शाही सौगात के रूप में क्या लेना पसंद करेंगी?



मरोजिनी नायड

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदराबाद के निज़ाम के प्रति सरोजिनी के मन में बड़े आदर और सम्मान का भाव था। उन्होंने निज़ाम के लिए प्रशस्ति गीत लिखा। यह प्रशस्ति गीत उन्हें रमज़ान में अफ़तार की दावत के सम्मान में आयोजित दरबार में भेंट किया गया। उस समय की प्रथा के अनुसार यह तो संभव नहीं था कि सरोजिनी स्वयं जाकर दरबार में अपनी कविता सुनातीं। यदि वह ऐसा करतीं तो सारे देश में चर्चा का विषय बन जातीं। उस समय को देखते हुए यह भी अपने आप में एक अनुपम बात थी कि भरे दरबार में एक महिला की ओर से शासक को कविता भेंट की जाए। सरोजिनी की यह कविता दरबार में सुनाई गई। उसके साथ ही एक प्रसिद्ध उर्दू शायर ने उसका शानदार उर्दू अनुवाद पेश किया। निज़ाम ने सरोजिनी के इस प्रशस्ति गीत को बहुत पसंद किया। निज़ाम स्वयं भी कविता करते थे। उनके गीत उनके दरबारियों और किसानों में गाए जाते थे। सरोजिनी को भी निज़ाम का काव्य पसंद था। वह निजाम की तत्कालीन राजनीतिक दृष्टि से डांवाडोल स्थिति से भी दु:खी थीं। वह उन्हें तत्कालीन हेमलेट कहती थीं। हेमलेट, शेक्सपीयर के प्रसिद्ध नाटक हेमलेट का नायक है। उनके अनुसार निज़ाम के गीत सुरुचि संपन्न और हृदय-स्पर्शी थे। वह निज़ाम को छोटी कविताओं की अपेक्षा कोई अधिक अच्छी भेंट भेजना चाहती थीं, किंतु अपनी लंबी बीमारी की वजह से न भेज सकीं। सरोजिनी उस समय ऐसे काव्य की रचना करना चाहती थीं जिसमें निज़ाम के राज्य का वैभवपूर्ण रूप भरा हो। सरोजिनी ने जिस हैदराबाद में अपना बचपन बिताया था वही हैदराबाद अब उनके लिए महान इतिहास के रंगों से भरपूर काव्य का विषय बन गया।

एडमंस गास ने सरोजिनी को सलाह दी थी कि वह अपने देश के वातावरण और विषयों पर कविता लिखें। इंगलैंड से लौटने के बाद उन्होंने किया भी ऐसा ही। उनके पास शब्दों का एक विशाल भंडार था। सरोजिनी सारगर्भित शब्दों का प्रयोग उनके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंदर्य और लय पर मुग्ध होकर किया करतीं। उन्होंने बहुत सुंदर गीत लिखे। उन्होंने भारतीय नर्तकों और पालकी के कहारों के संबंध में गीत लिखे। शब्दों का असाधारण प्रयोग उनकी कविता में मिलता है। उनके श्रोता उनके शब्दों के बंदी बन जाते हैं। पालकी के कहार गीत में वह कहती हैं—

धीमे ओ धीमे उसे ले जाते हैं हम
हमारे गीतों के समीकरण में फूल सी झूलती वह
धारा के फेन पर चिड़िया सी फिसलती वह
स्वप्न के ओठों पर स्मृति सी तैरती वह
मस्ती से ओ मस्ती से उड़ते जाते हैं गाते हैं हम
डोरी में पिरोई मोती सी उसे ले जातें हैं हम।
कोमलता से ओ कोमलता से उसे ले जाते हैं हम
हमारे गीत के ओसकण में तारिका सी झूलती वह
ज्वार की लहर पर शहतीर सी उछलती वह
वधूकी आंखों से अश्रुकण सी ढलती वह
धीमे ओ धीमे उड़ते जाते हैं, गाते हैं हम
डोरी में पिरोई मोती से उसे ले जाते हैं हम।

सरोजिनी की कविता इतनी उत्तम और महान थी कि उन्हें बहुत जल्दी ही समूचे भारत, इंगलैंड और यूरोप में मान्यता प्राप्त हो गई। उसकी अंग्रेजों द्वारा लिखे काव्य से तुलना होने लगी। सन् 1898 से लेकर 1915 तक का काल उनके जीवन का गीत-काल कहा जा सकता है। इसी काल में वह राष्ट्रीय जीवन में पूरी तरह छा गई थीं। इसी काल में वह एक पत्नी, मां और कवि की भूमिका के लिए पूरी तरह समर्पित रहीं।

सरोजिनी की कविता में भावों को दिव्यता प्रदान की गई है। नारी को वह श्रेष्ठ मानती हैं। चेतना और जागरण के भावों को अभिव्यक्त करते हुए वह कहती हैं—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जागो। हे मां जागो। जीवित हो फिर से जाग उठो अवसाद
त्याग अब,
और दूर ग्रहों से संयमित भार्या सी
जनो नया गौरव अपनी अकाल कोख से।
भविष्य तुम्हारा तुम्हें पुकारता लय-संकुल स्वर में
चंद्र–सम गौरव, गरिमा, विस्तृत विजयों की ओर
जागो हे सुप्त मां जागो। और मुकुट स्वीकार करो तुम।
प्रभुत्वमय अतीत की थीं साम्राज्ञी जो कभी।

उनके स्वभाव का यही पक्ष उन्हें मातृभूमि की सेवा में खींच-कर ले गया। शुरू में वह पुरानी परंपराओं से जुड़े अन्याय को दूर करने में लगीं, जिसके फलस्वरूप उन्होंने बाद में भारतीय नारी की मुक्ति का आह्वान किया। बाद में वे सक्रिय राजनीति और क्रांति की तरफ बढ़ीं।

लेखन के लिए सरोजिनी के पास अपार ज्ञान, अनुभव और हैदराबाद की मिली-जुली संस्कृति की पृष्ठभूमि थी। सौंदर्य के प्रति अभिलाषा ने उनको कवयित्री बना दिया। सौंदर्य उन्हें हर जगह आकर्षित कर लेता। भावविभोर कर देता। उनकी कविता स्वयं गाती हुई प्रतीत होती। मानों वेगवान विचार और बलवान भाव स्वयं गीतों में उबल पड़े हैं।

सरोजिनी की काव्य प्रतिभा के कारण भारत उन्हें दो नामों से याद करता है–'भारत कोकिला' और 'हिंदुस्तान की बुलबुल'। उनकी भाषा, वाक्य रचना और अलंकार विधान अपूर्व था। वह भारत की गेटे या कीट्स बनना चाहती थीं। उनकी आकांक्षाएँ बहुत उँची थीं। समय के साथ-साथ सरोजिनी के काव्य में भी प्रौढ़ता आती गई। उनकी 'द ब्रोक्रन विंग' पहले विश्व महायुद्ध के समय में लिखी गई रचना है। उसे उन्होंने समर्पित किया था 'आज के स्वप्न और कल की आशा को'। इस पुस्तक में उन्होंने विविध विषयों को अपनाया। 'प्रेम की तीर्थयात्रा' (तीन भागों में)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखी गई कविता है। इस कविता के अंतिम भाग में सरोजिनी की आत्मा करुणा से परिपूर्ण हो गई।

सरोजिनी के काव्य का मुख्य विषय प्रेम था। आगे चलकर यही प्रेम राष्ट्र-प्रेम में विकसित हुआ। शांति, सत्य और आनंद के स्वप्न उन्होंने अपनी कविता के द्वारा देखे। उनके गीतों की लय उन्हें परम आनंद से भर देती थी। 'घूमने वाले गायक' में वह कहती हैं—

जहाँ बुलाती है हवा की आवाज हमारे घूमते पैरों को
गूंजते जंगल और गूंजती सड़क से होकर
लेकर वीणाएं अपने हाथों में हमेशा गाते हम घूमते,
सब लोग हैं हमारे संबंधी सारी दुनिया हमारी ही अपनी है।

वसुदेव कुटुंबकम् सारी दुनिया को अपना समझने की यह भावना कितनी महान् है।

उन्होंने अपने गीतों को लोक-गीतों के आधार पर भी लिखा। उनकी लय को उन्होंने मल्लाहों, जुलाहों, फसल काटने वालों से सुना था। यह लय उन्हें आनंदित कर देती। सरोजिनी का शहर हैदराबाद हिंदू मुस्लिम संस्कृति और कला का मिला-जुला केन्द्र था। फ़ारसी उन्होंने पढ़ी थी। उसमें लिखा भी था। उनके द्वारा सुने गये फ़ारसी अक्षर महान् सूफी संत अमीर खुसरो की बोली के थे। सरोजिनी पर अपने शाही शहर हैदराबाद, घर के उदार वातावरण, इस्लामी संस्कृति और काव्य का गहरा प्रभाव पड़ा। उसने उनमें एकता की भावना जगाई। इस एकता की भावना से प्रेरित होकर उन्होंने एक प्रार्थना गीत लिखा जिसमें सभी धर्मों को एक जगह एकत्र कर दिया गया है—

अल्लाह ओ अकबर। अल्लाह ओ अकबर!
मस्जिद औ मीनार से मुल्ला बुला रहे हैं,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करो इबादत अपनी, ऐ इस्लाम के चुनिंदों
फैल रहीं तेजी से सूर्यास्त की छायाएं,
अल्लाह ओ अकबर! अल्लाह ओ अकबर! एव मेरिया!
एव मेरिया!
श्रद्धानत पादरी हैं वेदी पर गा रहे,
कुमारी के बेटे को पूजने वाली
करो याचनाएं, सांध्य प्रार्थना की बज रही घंटियां,
एव मेरिया! एव मेरिया!
अहुर मज्द! अहुर मज्द!
कैसा प्रवाहित है गुरु गंभीर अवेस्ता!
ज्वाला और प्रकाश को सिर नवाने वालों
सिर झुकाओ जहां कि जल रही अमर शिखाएं
अहुर मज्द! अहुर मज्द!
नारायण! नारायण!
सुनो दिव्य संबोधन अनादि-अंत।
उठाओ हाथ जोड़ो तुम ब्रह्म की संतान!
उठाओ स्वर ऊंचे तुम भक्ति से भरे,
नारायण! नारायण!

सरोजिनी ने हैदराबाद के हिंदू-मुस्लिम साझेदारी वाले जीवन के विविध स्वरूपों पर भी अनेक कविताएं लिखीं। वह उदार मन, महान् कवयित्री, सच्चे अर्थों में हिंदुस्तान की बुलबुल थीं। उनकी लगभग सभी रचनाओं ने बहुत प्रसिद्धि प्राप्त कर ली। उनकी सबसे पहले प्रकाशित रचना 'सांग्ज' है, जिसे उनके पिता अघोरनाथ चट्टोपाध्याय ने सन् 1896 में प्रकाशित कराया। 'द गोल्डन थ्रेशोल्ड' (स्वर्णिम देहरी) काव्य को डब्ल्यू. हीनमान ने लंदन में सन् 1905 में प्रकाशित कराया। इंगलैंड में इसकी गणना सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तकों में थी। वहाँ की सभी प्रमुख पत्रिकाओं तथा समालोचकों ने इसकी बहुत प्रशंसा की। डब्ल्यू. हीनमान ने ही सन् 1912 में 'द बर्ड आफ टाइम'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(काल पंछी) और 1917 में 'द ब्रोकेन विंग' (भग्न पंख) प्रकाशित किया। डाड मीड एंड कंपनी ने सन् 1937 ई. में 'द स्कैप्टर्ड फ्लूट' प्रकाशित किया। इसकी भूमिका जोसेफ आसलैंडर ने लिखी है। सन् 1943 ई. में भारत में यह 'द स्कैप्टर्ड फ्लूट' (रजत मंडित वंशी) किताबिस्तान से प्रकाशित हुई। इसका दूसरा संस्करण 1946 में छपा। 'द गिफ्ट आफ इंडिया' हैदराबाद में लेडीस वार रिलीफ एसोसिएशन की ओर से 1914 और 15 में मुद्रित हुई। 'गोपाल कृष्ण गोखले' बाम्बे क्रानिकल से पहली बार प्रकाशित हुई। 'द सोल आफ इंडिया' का पहला संस्करण हैदराबाद से 1917 में, दूसरा 1919 ई. में मद्रास के कैम्ब्रिज प्रैस से छपा। 'फेदर आफ डान' (प्रभात का पंख) हैदराबाद प्लेएड्री सोसाइटी से 1961 ई. में प्रकाशित हुआ।

उनकी बाल्यकाल की कुछ रचनाएं तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थीं। कलकत्ता के राष्ट्रीय पुस्तकालय के अभिलेखागार में उनकी कुछ प्रारंभिक कविताएं सुरक्षित हैं। उनमें से एक कविता 3 अक्तूबर 1896 की है, दूसरी 'ट्रैवलर्स सांग' (पथिक का गीत) उन्होंने तेरह वर्ष की अवस्था में लिखी थीं, तीसरी कविता उन्होंने चौदह वर्ष की अवस्था में अपने जन्मदिन पर लिखी। इनके अतिरिक्त वहाँ संग्रहीत कविताओं में से कुछ हैदराबाद और हैदराबाद के पास शोरपुर में लिखी गई थी जहाँ वह गर्मियों में विश्राम के लिए जाती थीं। एक गद्यगीत 'नीलांबुज' में उन्होंने प्रवाहशील और अलंकारिक भाषा में स्वप्नलोक की रचना की है जो शाही विलास और शान-शौकत में पले हुए उनके स्वप्नों भरे संसार का प्रतीक रहा। इस कविता में वह अकेली अलग होकर विश्व को स्पष्ट रूप से देखती हैं और कवितामयी भाषा में अपने भविष्य का चित्र खींचते हुए कहती हैं—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथापि, मुझे जाना होगा वहां जहां
अशांत विश्व करता है संकेत
और नियति के नगाड़ों की व्याकुल ध्वनियां बुलाती हैं मुझे।

वर्तमान युग की नई कविता के संबंध में सरोजिनी ने कहा था कि आधुनिक कविता का कोई भविष्य नहीं। अंततः कविता को लौटकर छंदबद्ध गीतों के अनुशासन और सौंदर्य की तरफ आना होगा। उन्हें विश्वास था कि आधुनिक कविता में अनुशासनहीनता और छंदमुक्तता शीघ्र ही समाप्त हो जाएगी यह कविता उन्हें सौंदर्यविहीन भी लगती। आज यदि सरोजिनी के शब्दों को परखा जाए तो उनकी बात उचित प्रतीत होती है। कविता की आधुनिकता का प्रयोगवाद या नई कविता का युग बीत गया है। कविता अपने पुराने स्वरूप की ओर लौट रही है।

* * *

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



5

राजनीति में प्रवेश

बालिका सरोजिनी बचपन से ही बहुत गंभीर और समझदार थीं। अपने पिता से उन्हें बहुत सी चीजें विरासत में मिली थीं। उनमें राजनीतिक वातावरण भी था। उनके पिता अपने समय के महान् सुधारक थे। वे राजनीति में भी हिस्सा लेते थे। सरोजिनी में राजनीतिक चेतना बचपन से ही थी। उनमें नेता बनने के पूरे लक्षण मौजूद थे। तेरह वर्ष की आयु में वह पड़ोस में जाकर प्रार्थना और भजन कराती थीं। एक बार आंगन में कुछ झगड़ा हो गया तो वह ड्योढ़ी पर खड़ी हुई बग्घी पर चढ़ गईं। उन्होंने वहाँ से नेताओं की तरह चिल्ला कर भाषण देना शुरू किया और कहा, 'जो लोग दो या तीन लोगों के समर्थन के आधार पर सही होने का दावा करते हैं, वे मूर्ख होते हैं।' इस बात से पता चलता है कि वह प्रारंभ से ही लोकतंत्र का समर्थन करती थीं। राजनीतिक दृष्टि से वह पूरी तरह जागरूक थीं।

सन् 1902 ई. में गोपाल कृष्ण गोखले ने सरोजिनी को देश की सेवा करने की प्रेरणा दी। उन्हें सरोजिनी का राजनीतिक पिता कहा जाता है। उन्होंने 1902 से ही सार्वजनिक सभाओं में भाषण देने शुरू कर दिए थे। बंबई की एक विशाल जनसभा तथा महिलाओं की सभा में उन्होंने भाषण दिए। सन् 1903 में मद्रास

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए एक भाषण में उन्होंने कहा, 'मेरे मन में जाति-धर्म और रंग के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रहा है।.... जब तक आप विद्यार्थी भाईचारे की भावना को प्राप्त नहीं कर लेते तब तक आपको यह आशा नहीं करनी चाहिए कि आप संप्रदायवादी नहीं रहेंगे। उस स्थिति में आपका राष्ट्रवादी बनना कभी भी संभव नहीं होगा।' आगे उन्होंने कहा, 'मैं आपसे कहती हूं कि आपके लिए यह गर्व की बात नहीं है कि आप मद्रासी हैं, यह भी गर्व की बात नहीं है कि आप ब्राह्मण हैं, न यह गर्व की बात है कि आप दक्षिण-भारतीय हैं और न यह कि आप हिंदू हैं। आपके लिए गर्व की बात तो यह है कि आप भारतीय हैं। इतना ही नहीं, आस्थाओं की राष्ट्रीय सीमाएं लांघकर समूची मानव-जाति तक विस्तार किया जाना चाहिए।' सरोजिनी में सुनने वालों के दिल को छू लेने की शक्ति थी। वे मंत्रमुग्ध हो जाते और उनका प्रभाव ग्रहण कर लेते।

सरोजिनी में देश-प्रेम की भावना जागृत करने का श्रेय गोपाल कृष्ण गोखले को है। सन् 1902 से लेकर अपनी मृत्यु, 1915 तक वे उन्हें प्रेरणा देते रहे। उन्होंने उन्हें कल्पना लोक से बाहर निकाला। यथार्थ ज़ीवन और देश की पुकार से परिचित कराया। गोखले ने कहा, 'आओ मेरे साथ खड़ी हो जाओ। नक्षत्र और पर्वत साक्षी हैं। उनके सामने अपने जीवन, अपनी प्रतिभा, अपने गीतों और अपनी वाणी, अपने चिंतन और अपने स्वप्नों को मातृभूमि के प्रति समर्पित कर दो। हे कवयित्री! शैल-शिखरों पर से दृष्टिबोध प्राप्त करो और घाटियों में श्रम कर रहे लोगों को आशा का संदेश सुनाओ।' सरोजिनी का तरुण मन गोखले की इस पुकार पर नई दिशा पा गया। उन्होंने उस युग की पुकार को सुना। देश-सेवा का व्रत लिया। उनका कवि रूप लुप्त होने लगा। वह देश की पुकार पर आगे बढ़ने लगीं। देश की वास्तविक स्थिति को उन्होने पहचाना और उसकी सेवा में तन-मन-धन से लग गईं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् 1905 ई. में उन्होंने विदेशी शासन की निंदा करना शुरू कर दिया। लार्ड कर्जन ने जब बंग विभाजन की बात की तो कलकत्ता में रोष छा गया। एक विशाल सभा हुई जिसमें विदेशी चीजों के बहिष्कार की बात तय की गई। सविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़ा गया। एकता की भावना बढ़ाने के लिए राखियां बांधी गईं जिसके द्वारा देश-सेवा का व्रत लिया गया। सरोजिनी ने 1906 में अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन में भाषण दिया। उन्होंने उन विद्यार्थियों को नई चेतना दी जो विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और विद्यालयों से बाहर आ गए थे। जिन्होंने अंग्रेजी शासकों की दासता करने के लिए प्रशिक्षण का विरोध किया। सरोजिनी के भाषण ने सबको झकझोर दिया। भाषण के बाद वह राष्ट्रभक्ति के गीत गाने वाली महिलाओं के पास जाकर खड़ी हो गईं। उन्होंने राष्ट्रप्रेम के गीत गाए। विद्यार्थियों पर और युवकों पर सरोजिनी का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने बनारस, कलकत्ता और बिहार में विद्यार्थियों की सभाओं में भाषण दिए। 1913 में उन्होंने लखनऊ के मुस्लिम लीग के अधिवेशन में भाषण किया और वह एकता की दूत बनीं।

सरोजिनी की भेंट महात्मा गांधी से 1914 में लंदन में पहली बार हुई। पहला विश्वयुद्ध शुरू हो चुका था। उसमें महात्मा गांधी अंग्रेजों की सहायता कर रहे थे। उन्होंने सरोजिनी से भी इस काम में सहयोग लिया। सरोजिनी एक प्रसिद्ध महिला क्लब 'लाइशियम' की सदस्या थीं। सभी सदस्यों ने 'इंडियन वालंट्री कोर' के लिए कपड़े सीने का काम अपने हाथ में लिया। इस युद्ध में अंग्रजों की सहायता के लिए महात्मा गांधी, सरोजिनी और दूसरे भारतीयों ने लंदन में इस कोर का संगठन किया था। सरोजिनी और महात्मा गांधी दोनों एक ही उद्देश्य के लिए काम कर रहे थे।

सरोजिनी महात्मा गांधी से दस वर्ष छोटी थीं। दोनों की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुलाकात लंदन में बड़े नाटकीय ढंग से हुई। सरोजिनी उनसे मिलने, उनका मकान खोजती हुई केन सिंगटन के पुराने ढंग के मकान की सीधी सीढ़ियों पर ऊपर चढ़ गई थीं। वहाँ काले कंबल पर बैठे हुए महात्मा गांधी उन्हें दिखाई दिए। वह लकड़ी के कटोरे में टमाटर और जैतून के तेल का बना भोजन कर रहे थे। भुनी हुई मूँगफलियाँ और केले के आटे के बने हुए बिस्कुटों के पिचके डिब्बे पास में रखे थे। गांधी जी को इस तरह देखकर सरोजिनी हँसने लगीं। हँसने का कारण यह रहा होगा कि भारत के इस महान नेता को उन्होंने बहुत सीधा-सादा और सरल पाया। सरोजिनी को इस तरह मुक्तहँसी हँसते देख महात्मा गांधी ने कहा, 'अरे तुम अवश्य ही सरोजिनी नायडू हो। दूसरा कौन इस तरह हँस सकता है।' सरोजिनी की मुक्तहँसी उनके मिलने वालों में बहुत प्रसिद्ध थी। उसी समय से सरोजिनी और महात्मा गांधी में मित्रता हो गई। दोनों देश की राजनीति में एक-दूसरे के सहयोगी बने।

सरोजिनी नायडू का सक्रिय राजनीतिक जीवन 1916 में बंबई कांग्रेस से शुरू होता है। इस अधिवेशन में उन्होंने स्वशासन संबंधी प्रस्ताव पेश किया था। कांग्रेस का यह अधिवेशन एस.पी. सिन्हा की अध्यक्षता में हुआ। 1917 में कांग्रेस का अधिवेशन श्रीमती एनी बीसेंट की अध्यक्षता में कलकत्ते में हुआ। उस अधिवेशन में सरोजिनी ने भावपूर्ण भाषण में कहा, 'भारत की नारी आपका झंडा संभालने और आपकी शक्ति को थामने के लिए आपके साथ होगी और यदि आपको मरना भी पड़े तो याद रखियेगा कि भारत के नारीत्व में चित्तौड़ की पद्मनी की आत्मा समाहित है।'

गांधी जी ने अहमदाबाद के निकट साबरमती आश्रम की स्थापना की। सरोजिनी नायडू ने अपनी सेवाएँ उन्हें समर्पित कर दीं। वह आश्रम के काम-काज में लग गई। आंध्र प्रदेश की एक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा में उन्होंने देश के युवकों को ललकारा। उनमें नई चेतना भरते हुए कहा, 'युवा वर्ग के पास सही आदर्श और दृढ़ विचार होने चाहिए। यदि कोई देवी या अप्सरा मुझ से पूछे कि मुझे किस चीज की कामना है तो मैं कहूँगी कि मुझे युवा पीढ़ी के मस्तिष्क को ढालने की शक्ति दो।'



महात्मा गांधी और सरोजिनी नायडू

1915 से 1917 का काल एनी बीसेंट और सी.पी. रामस्वामी के साथ देश में राजनीतिक चेतना जगाने, भाषण देने और यात्राओं में निकल गया। सरोजिनी और एनी बीसेंट समान रूप से कुशल वक्ता थीं। सरोजिनी ने अपनी इस कला और शक्ति को पहचान लिया था। इसका प्रयोग देश की सेवा के लिए शुरू कर दिया था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1916 में उन्होंने भारत में होमरूल लीग (स्वराज्य संघ) का गठन किया और देश को अंग्रेज़ों की दासता से छुड़ाने का काम तेजी से शुरू कर दिया। वह यह बात अच्छी तरह समझ गई थीं कि जब देश के सभी नागरिक मिलकर एक साथ काम करेंगे और प्रयास करेंगे तो हम आजादी पा लेंगे अन्यथा नहीं। एनी बीसेंट भी निरंतर काम में लगी हुई थीं। उन्होंने 'न्यू इंडिया' नामक दैनिक पत्र और 'कामनवैल्थ' नामक साप्ताहिक पत्र निकाला। इन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से सरोजिनी और दूसरे नेताओं के विचार जनता तक पहुंचते रहते थे। गांधी जी भी दक्षिण अफ्रीका के सफल सत्याग्रह के बाद भारत लौट आए थे। कांग्रेस में सरोजिनी की लोकप्रियता बढ़ने लगी। उन्हें राष्ट्रीय नेता माना जाने लगा। 1916 में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में सरोजिनी ने उत्साही भाषण किया। वहाँ उन्होंने स्वशासन संबंधी प्रस्ताव का समर्थन किया। उन्होंने कहा, 'मातृभूमि की सेवा का आनंद सारे व्यक्तिगत सुखों से बढ़कर है। हमारे निजी दुखों को सबसे अधिक राहत तब मिलती है जब हम देश के लिए कष्ट उठाते हैं। देश के लिए जीना जीवन की सर्वोच्च विजय है तथा उसके लिए मरना अमरत्व का अमूल मुकुट प्राप्त करना है।'

इस अधिवेशन में उन्होंने अधिकारों से वंचित पुरुषवर्ग की ओर से भी आवाज उठाई। उन्होंने कहा, 'वह भारत की भावी माताओं की ओर से आवाज बुलंद कर रही हैं कि उनके पुत्रों को उनका जन्मसिद्ध अधिकार लौटाया जाये। माताएँ चाहती हैं कि उनके बेटे निस्तेज और यंत्रवत बनने के बजाए सच्चे अर्थों में पुरुष बनें। मुसलमान, राजपूत और सिख गर्वपूर्वक शस्त्रधारण करने का विरासत में प्राप्त करते थे। इस अधिकार से वंचित हो जाना उनके लिए अपमान की बात है।' यह अधिवेशन बहुत महत्वपूर्ण रहा। सरोजिनी अब एक शक्तिशाली नेता बन चुकी थीं। उन्होंने लखनऊ में ही मुस्लिम लीग के अखिल भारतीय अधिवेशन में भाग लिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरोजिनी अनेक बार दक्षिण अफ्रीका, फीजी, मारीशस आदि देशों में गईं। वहाँ जाकर उन्होंने भारतीय मजदूरों के प्रति किये जाने वाले अत्याचारों के विरोध में आवाज उठाई। चंपारन में गांधी जी ने सत्याग्रह किया। नील की खेती करने वाले मजदूरों की दशा खराब थी। सरोजिनी ने इस सत्याग्रह में महात्मा गांधी का साथ दिया। वह मजदूरों की दशा सुधारना चाहती थीं।

दसंबर 1917 में उन्होंने मद्रास में विद्यार्थियों के एक सम्मेलन में भाग लिया। नौजवान मुसलमानों की एक सभा को संबोधित किया। विद्यार्थियों के सामने वह 'भविष्य की आशा' विषय पर बोलीं। उन्होंने मद्रास में विशेष प्रादेशिक सम्मेलन में 'कांग्रेस-लीग योजना' और मद्रास प्रेसीडेंसी एसोसिएशन के समक्ष 'संप्रदायों के बीच सहयोग' विषय पर भी चर्चाएं कीं।

उनकी राजनीतिक गतिविधियां बढ़ती रहीं। उन्हें आराम तभी मिलता जब अंग्रेज सरकार उन्हें जेल में बंद कर देती। वह देश में जागृति फैलाने के लिए यात्राएं किया करतीं। पटना में उन्होंने आपसी एकता पर भाषण दिया। उनका भाषण सुनने वालोंको मोहित कर डालता। उन्होंने कहा, 'सदियों पहले जब पहली मुसलमान सेना भारत में आई तो उसने अपने तम्बू गंगा के पवित्र किनारे पर गाड़े और गंगा के पवित्र जल में अपनी तलवारों को धोया। गंगा के इस जल अभिषेक ने उन मुस्लिम आक्रमणकारियों का पहला स्वागत किया जो बाद में भारत की संतान बन गए।' उन्होंने बताया कि आक्रमणकारी भी देश में बसजाने के बाद देश का अंग बन जाते हैं। समय का अंतराल आपसी भेदभाव को मिटा देता है।

वह अनेक संस्कृतियों और युगों के बीच एक सेतु के समान थीं 'भारत की आत्मा' भाषण में उन्होंने विभिन्न ऐतिहासिक युगों को एक सूत्र में पिरोते हुए कहा, 'अकबर ने भिन्न नस्लों,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मों और जातियों के लोगों के बीच एकता स्थापित की। अंग्रेज साहसिक और संतुलित कौम है। भारत में उन्होंने हमारी राष्ट्रीय संस्कृति के पतन से लाभ उठाया है। मुझे विश्वास है कि भारत फिर से उठेगा। अपने वैयक्तिक तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता के जन्मसिद्ध अधिकार को प्राप्त करेगा।'

सरोजिनी एक क्रांतिकारी महिला थीं। कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में भी उन्होंने स्वराज्य की माँग को दोहराया, 'हम क्या मांग कर रहे हैं, कुछ भी नया नहीं, कुछ भी चौंकाने वला नहीं। हम केवल ऐसी वस्तु मांग रहे हैं जो जीवन और मानीय चेतना जितनी पुरानी है। यह संसार में हर आदमी का पैदाइशी हक है। अपने प्रांत, अपने क्षेत्र में अवसर मिलने चाहिए। अपने देश में अपनी विरासत से वंचित होकर देश-निकाले जैसी सिति में जीने के लिए हमें विवश नहीं किया जाना चाहिए। वह समय बीत गया जब हम बौद्धिक और राजनीतिक दासता से जकड़ेहुए संतुष्ट थे। आपसी फूट के दिन भी बीत गए हैं। अब यह हिंओं या मुसलमानों का भारत नहीं रहा है। एक संयुक्त भारत बन गया है।' सरोजिनी नायडू ने इस बात को भली-भांति समझ लिय था कि देश के लिए साम्प्रदायिक एकता जरूरी है। उसके िना राजनीतिक आजादी मिल नहीं सकती।

गांधी जी का सत्याग्रह आंदोलन जोर पकड़ रहा ग। सरोजिनी बीमार थीं। देश की सफलता का लक्ष्य उनके साने था। वह मद्रास से अहमदाबाद गईं। सत्याग्रह आंदोलन का समर्थन करते हुए उन्होंने कहा, 'विष अर्थात बल प्रयोगके विरुध एक ही उपचार बचा है और वह है सत्याग्रह।' उन्होंने जनता से कहा कि सब मिलकर इस आंदोलन में भाग लें। इसे सफल बनाएं।

30 मार्च 1919 को गांधी जी ने व्यापक रूप से सत्याग्र आंदोलन छेड़ दिया। देश में हड़तालें होने लगीं। सरोजिनी उनवं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ सत्याग्रह में हिस्सा लेतीं। दिल्ली में भी इसी दिन हड़तालें शुरू हो गईं। आंदोलन तेजी से बढ़ने लगा। 6 अप्रैल को आंदोलन बड़ी तीव्रता से शुरू हुआ। शीघ्र ही भयंकर रक्तपात में बदल गया। गांधी जी अमृतसर जाने के लिए निकले। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। दंगे और भड़क उठे। 13 अप्रैल को अमृतसर में जलियांवाला बाग में बेदर्दी के साथ गोली चलाई गई। यह गोली तब तक चलती रही, जब तक बंदूकें खाली नहीं हो गईं। गांधी जी को बहुत दुःख हुआ। उनके सत्याग्रह का फल अच्छा नहीं निकला। सरोजिनी ने उस समय गांधी जी को साहस बँधाया। वह उनके लिए शक्ति का स्रोत बन गईं। 18 अप्रैल को उन्होंने बंबई में स्वयंसेवको की एक मीटिंग बुलाई। उसमें विश्वसनीय कार्यकर्ताओं को अहिंसक असहयोग का कार्य चालू रखने के लिए व्यक्तिगत सत्याग्रह की जिम्मेदारी सौंपी।

जुलाई 1919 में सरोजिनी अखिल भारतीय होमरूल लीग की सदस्या के रूप में इंगलैंड भेजी गईं। वहाँ उन्होंने सारे भारतीय राजनीतिक संगठनों को एक जगह मिलाया। भारतीय महिलाओं के लिए मताधिकार की मांग करने के लिए एक शिष्टमंडल बनाया। उसका उन्होंने स्वयं नेतृत्व किया।

तुर्की के खिलाफत आंदोलन ने भारतीय मुसलमानों को बहुत प्रभावित किया। भारतीय मुसलमान अंग्रेजों के खिलाफ हो गए। गांधी जी और सरोजिनी नायडू दोनों ने इस आंदोलन का समर्थन किया। मौलाना मुहम्मद अली के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल इंगलैंड गया। लंदन के किंग्सवे हाल में एक सभा का आयोजन हुआ। उसमें सरोजिनी नायडू ने भी भाषण दिया।

इंगलैंड में सरोजिनी ने 3 जून 1920 में पंजाब की व्यथा और लज्जा विषय पर बोलते हुए पूरे जलियांवाला बाग कांड के संबंध में बताया। उन्होंने कहा, 'अपनी वीरता पर गर्व करने वालो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमने किस कायरता का सबूत दिया है। पंजाब की स्त्रियों, कुल-बधुओं पर किए गए अपमान और उन पर ढ़ाए गए जुल्म का बदला लेने के लिए आप कुछ नहीं करेंगे। ब्रिटेन के उदारवादी लोकमत पर इस घटना के रहस्योद्घाटन से गहरा आधात पहुंचा। भारत मंत्री श्री मांटेयू ने सरोजिनी के आरोपों को लिखित चुनौती दी। जिन तथ्यों का उद्घाटन सरोजिनी ने किया था उनसे कोई इंकार न कर सका।

सरोजिनी स्वीडन, स्विट्जरलैंड, फ्रांस का दौरा करके 1921 में भारत लौटीं। असहयोग आंदोलन जोरों पर था। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने 'सर' की उपाधि लौटा दी थी। सरोजिनी ने भी अपनी कैसरे हिंद की उपाधि को लौटा दिया। उपाधि उन्हें 1908 में हैदराबाद में बाढ़ के दौरान सेवा कार्यों के लिए मिली थी। इस उपाधि के साथ मिले हुए कैसरहिंद के सोने के तमगे को भी उन्होंने वापस कर दिया।

4 अक्तूबर 1921 को गांधी जी, सरोजिनी और देश के दूसरे नेताओं ने राष्ट्र के नाम घोषणा पत्र जारी किया। इस पत्र में असहयोग की वजह, उसे अपनाने और उसके कार्यक्रमों को बताया। जनता ने इस घोषणा पत्र का स्वागत किया। प्रिंस आफ वेल्स (ब्रिटेन के राजकुमार) 17 नवंबर को भारत आए तो उपद्रव मच गया। रक्तपात हुआ। भीड़ को शांत करने सरोजिनी गईं। उन्होंने बड़े साहस से काम लिया। दंगाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया।

1922 में अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति की 37 वीं बैठक में 'गया' में सरोजिनी ने अनेक प्रस्ताव पेश किए। उन्होंने कमाल पाशा और तुर्की राष्ट्र की सफलता पर कांग्रेस की ओर से बधाई दी। उन्होंने कहा, 'तुर्की को आज़ाद कराने के लिए भारत संघर्ष करता रहेगा।' जनता बड़ी सीमा तक जाग चुकी थी। आंदोलन तेजी से बढ़ रहा था। सरोजिनी का काम गांधी जी के साथ बहुत बढ़ गया था। गांधी जी के बंदी बना लिए

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने से उनकी जिम्मेदारी और बढ़ जाती। मालाबार में कुछ साम्प्रदायिक उपद्रव हुए। सरकारी अधिकारियों ने इस उपद्रव का तीव्र दमन किया। सरोजिनी इस घटना से बहुत खिन्न हुईं। उन्होंने इस सैनिक कार्यवाही की कड़ी निंदा की। उन्हें बुरा लगा कि कानून और व्यवस्था के नाम पर बेगुनाह लोगों पर सरकार ने अत्याचार किए। उन्होंने इस अंग्रेजी सरकार के कानून को पशुबल प्रयोग तक कह डाला। सरोजिनी के इस साहसपूर्ण भाषण से मद्रास सरकार बहुत खिन्न हुई। उन पर मुकदमा चलाने की बात भी उठाई गई। सरोजिनी ने बड़े साहस से परिस्थितियों का सामना किया।

सरोजिनी के कार्यक्रमों ने 1923 ई. में नया मोड़ लिया। अफ्रीका में बसने वाले भारतीयों की समस्या सामने थी। सरोजिनी नायडू कीनिया गयीं। वहाँ उन्होंने इंडियन कांग्रेस के अधिवेशन में भारत का प्रतिनिधित्व किया। अफ्रीका में भारतीयों की स्थिति खराब थी। गोरे लोग उन्हें अलग रखते थे। भारतीयों को अधिकारों से वंचित कर दिया गया था। उनके लिए कानून भी कठोर बना दिए थे। सन् 1917 ई. से ही सरोजिनी अफ्रीका में बसे इन भारतीयों की कठिनाइयों को देख रही थी। अंग्रेजों ने वहाँ भारतीयों पर बहुत अत्याचार और अमानवीय व्यवहार किया था। सरोजिनी भारतीयों के लिए कुछ उपयोगी कार्य करना चाहती थीं। उनका उत्साह बढ़ गया था।

जनवरी 1924 में सरोजिनी महात्मा गांधी की दूत बनकर पूर्वी अफ्रीका भारतीय कांग्रेस की अध्यक्षता करने के लिए मोम्बासा गईं। उनका स्वागत अपार हर्ष के साथ वहाँ हुआ। वह जोहान्सबर्ग, ट्रांसवाल, डरबन, नेटाल और रोडेशिया भी गईं। वह जहाँ भी जातीं वहाँ की जनता उनके भाषण को सुनने के लिए बड़ी संख्या में जमा हो जाती। वे वहाँ के लोगों का साहस बढ़ातीं। उन्हें आजादी की लड़ाई और अपने अधिकार पाने के लिए उत्साहित करतीं और प्रेरणा देतीं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12 अप्रैल को सरोजिनी ने लंदन में ब्रिटिश-इंडियन एसोसियेशन के सामने दक्षिणी अफ्रीका की स्थिति बताते हुए कहा कि दक्षिण अफ्रीका की वास्तविक समस्या एक लाख साठ हजार भारतीयों की नहीं बल्कि वहाँ के साठ लाख मूल अफ्रीकी निवासियों की है।

सरोजिनी दक्षिणी अफ्रीका भारतीय सम्मेलन के चौथे अधिवेशन की अध्यक्ष बना दी गईं। यह सम्मेलन नेटाल नगर के बड़े नगर सभागार में हुआ। सरोजिनी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा, 'भारतवासियों को अफ्रीका की ओर इस दृष्टि से नहीं देखना चाहिए कि अफ्रीका उनके लिए क्या कर सकता है। वरन् इस दृष्टि से देखना चाहिए कि वह अफ्रीका के लिए क्या कर सकता है।'

12 जून 1924 को सरोजिनी बंबई लौट आईं, बंबई में उनका अपार हर्ष के साथ स्वागत हुआ। इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा, 'दक्षिणी अफ्रीका का अभिन्न अंग बनना भारतीयों का मुख्य कार्य होना चाहिए। शिक्षित भारतीयों को दक्षिणी अफ्रीका भेजा जाए ताकि वह वहाँ जाकर व्यापारियों को सहारा दे सकें।' अब देश की राजनीति में सरोजिनी पूरी तरह जम कर काम कर रही थीं। उन्होंने बहुत सी जिम्मेदारियों को सफलतापूर्वक निभाया।

* * *

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6

कांग्रेस की अध्यक्षता

गांधी जी सरोजिनी की योग्यता और उनकी संगठन शक्ति से पूरी तरह परिचित हो चुके थे। वह चाहते थे कि सरोजिनी नायडू को कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया जाए। उन्हें विश्वास था कि वे इस महत्वपूर्ण पद के लिए पूरी तरह उपयुक्त हैं। अध्यक्ष होकर जो काम वे करेंगी वह देश के लिए उपयोगी होगा। सरोजिनी नायडू के खुले विचार रूढ़िवादी पुराने लोगों को अच्छे नहीं लगते थे। उनका साहस और आवेश कभी-कभी गांधी जी को भी परेशानी में डाल देता था। गांधी जी सरोजिनी को कांग्रेस का अध्यक्ष बनाना चाहते थे। इस के लिए. उन्हें एक वर्ष इंतजार करना पड़ा। हिंदू-मुस्लिम समस्या को हल करना कठिन हो रहा था। कांग्रेस के दोनों गुटों के बीच एकता नहीं थी। इस के लिए एक समिति बनाई गई। सरोजिनी को इस समिति का अनिवार्य अंग माना गया। इस समिति में गांधी जी, जिन्ना, सप्रू और मोहम्मद अली भी थे। अप्रैल 1925 में सरोजिनी को राष्ट्रीय सप्ताह का आयोजन सौंपा गया। यह पहला वार्षिक आयोजन था। इसके बाद उन्हें बंबई प्रदेश कांग्रेस समिति के अध्यक्ष पद पर अनेक वर्षों तक यह काम करना पड़ा। उन्होंने सप्ताह भर का कार्यक्रम बड़ी कुशलता के साथ तय किया, जो इस प्रकार था:

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर-घर जाकर बहिष्कार के प्रतिज्ञा-पत्रों को इकट्ठा करना;
झण्डा फहराना और धरना देना;
विदेशी कपड़ों के विरुद्ध प्रचार और प्रदर्शन;
विदेशी कपड़ों की होली जलाना;
प्रभात फेरियां निकालना और बहिष्कार के नारे लगाना;
फेरी लगा कर खादी बेचना;
कताई और तकली चलाने की प्रतियोगिताएँ;
मिलों में बनी चीनी का विरोध दिवस मनाना;
पेट्रोल और मिट्टी के तेल का विरोध दिवस मनाना;
विदेशी औषधि विरोध दिवस मनाना;
विलासिता विरोध दिवस मनाना;
महिला और बाल दिवस मनाना और
जलियाँवाला बाग दिवस मनाना।

बेलगाम कांग्रेस का अधिवेशन खत्म हुआ। सबने यह अनुभव किया कि अगले अधिवेशन के लिए अध्यक्ष पद सरोजिनी नायडू को मिलना चाहिए। गांधी जी ने कानपुर में स्वयं उनके नाम का प्रस्ताव रखा। जब गांधी जी के साथ सरोजिनी पंडाल में गईं तो सब लोग उठकर खड़े हो गए। उस समय सरोजिनी बहुत अच्छी लग रही थीं। उनके साथ उनकी बड़ी बेटी थी। वह गांधी जी के साथ समस्त दौरों में सरोजिनी के साथ रहती थी। सरोजिनी नायडू के पति डा. नायडू सरोजिनी की बीमारी की वजह से चिंतित रहते थे। सरोजिनी के मुख पर अस्वस्थता न थी अपार उत्साह झलकता था। सरोजिनी को कांग्रेस की अध्यक्षा बना दिया गया। स्वागत समिति के अध्यक्षीय भाषण के बाद दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि मंडल के नेता ने भाषण के लिए अनुमति मांगी। उसने कहा, 'दक्षिणी अफ्रीकी भारतीयों ने भारत को संसार में महानतम जीवित व्यक्ति दिया है। महात्मा जी हमारे हैं, सरोजिनी नायडू भी हमारी हैं। आपको

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें कम से कम एक या दो नेता देने होंगे जो दक्षिण अफ्रीका जाएँ और हमारे संघर्ष में हिस्सा लें।' सरोजिनी को उनका चित्र भेंट करते हुए उन्होंने कहा, 'यदि हम सरोजिनी नायडू को ले जाएँ तो उनकी अनुपस्थिति में उनका चित्र छोड़ जाएँगे जिसे देख कर आप संतोष कर सकें। हम यह चित्र अपनी मां और मौसी को दक्षिण अफ्रीकी भारतीयों के प्रेम के प्रतीक के रूप में भेंट करते हैं।' सरोजिनी नायडू ने हमेशा की तरह अपना अध्यक्षीय भाषण, जुबानी, मंच पर पहुंच कर बड़े सहज और स्वाभाविक ढंग से दिया— 'मित्रों, एक महान पद का भार और महान दायित्व आपने मेरे अकुशल हाथों में देकर मुझे जो असाधारण सम्मान दिया है उसके लिए आपके प्रति आभार प्रकट करते हुए मेरे मन में जो गंभीर भाव उमड़ रहे हैं उनको शब्द देने के लिए यदि मैं मनुष्य की भाषा के सारे कोषों को छान डालूं तब भी मुझे आशंका है कि मैं उपयुक्त शब्द नहीं खोज पाऊंगी।..... मुझे इस बात की पूरी चेतना है कि आपने अपना सबसे कीमती उपहार केवल उस सामान्य सेवा के बदले में ही नहीं, जिसका सौभाग्य मुझे देश और विदेश में मिला, बल्कि भारतीय नारीत्व के प्रति उदारतापूर्वक सम्मान दिया। पहले भारतीय नारी को उसका वह पद पुनः दिया है जो उसे हमारे देश में कभी प्राप्त था।..... मैंने एक भारतीय माँ के नाते पालना झुलाया है और कोमल लोरियाँ गाई हैं। वहीं मैं अब स्वतंत्रता की ज्योति जलाऊँगी।'

अपने कार्यक्रम को उन्होंने स्त्रियों के अनुरूप बहुत मध्यम कोटि का घरेलू कार्यक्रम बताया। उसका उद्देश्य भारत माँ को उसका सही स्थान दिलाना है। उसे अपने घर की सर्वोच्च स्वामिनी बनाना है। उन्होंने आने वाले वर्ष को व्यवस्थित करने की बात की। विभिन्न सांप्रदायों और धर्मों में एकता स्थापित करने को कहा। आपसी लड़ाई-झगड़े मिटाने की बात कही। देश की दीन-हीन स्थिति को समाप्त करने का कार्यक्रम रखा। सबसे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँग की कि इन कठिन कार्यों में पूरा सहयोग दें। उन्होंने असहयोग, अहिंसा, गाँवों की देखभाल, शिक्षा, राष्ट्रीय सेना, दक्षिण अफ्रीका और हिंदू-मुस्लिम एकता की जरूरत पर बल दिया। उनका विचार था कि आज़ादी की लड़ाई में डर और भय के लिए जगह नहीं है। उन्होंने दोनों हाथ उठाकर संकट की घड़ी में अडिग आस्था और साहस प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। इसके बाद अपना कार्य आरंभ किया। उन्होंने विनती की कि ईश्वर विजय के क्षणों में भी विनम्रता दे। कानपुर कांग्रेस अधिवेशन में उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कांग्रेस में महिला विभाग बनाने का सुझाव भी दिया। वे चाहती थीं कि राष्ट्रीय कामों में महिलाएँ हिस्सा लें।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के इतिहास में सरोजिनी नायडू का यह अध्यक्षीय भाषण बड़ा महत्वपूर्ण है। उनका यह सबसे छोटा भाषण था जो कांग्रेस के मंच से दिया गया। साथ ही यह बहुत मधुर और प्रभावित करने वाला भी था। हजारों प्रतिनिधियों और दर्शकों ने बड़े उत्साह के साथ सरोजिनी नायडू की अध्यक्षता का समर्थन किया। सरोजिनी नायडू ने अध्यक्ष बनते ही अपनी शक्ति को पूरी तरह संगठित किया। कांग्रेस को बल प्रदान किया। इस कार्यकाल में कुछ गंभीर परिस्थितियां भी उत्पन्न हुईं। सरोजिनी ने उन्हें बड़ी कुशलता के साथ हल कर लिया।

इस बीच सरोजिनी नायडू को केनेडा और अमेरिका आदि देशों में भी जाना पड़ा। सन् 1929 में जब वह भारत लौटीं तो मानसिक और शारीरिक रूप में काफी थकी हुई थीं। गांधी जी ने उनकी इस यात्रा को महान विजय बताया था। कुछ समय बाद नवंबर 1929 में वह अपनी बड़ी बेटी पद्मजा के साथ पूर्वी अफ्रीकी भारतीय कांग्रेस के सम्मेलन की अध्यक्षता के लिए भी गईं।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

7

आज़ादी के लिए संघर्ष

देश में आज़ादी पाने की कामना चारों तरफ बढ़ रही थी। सरोजिनी प्रारंभ से ही राजनीति में भाग ले रही थीं। वह देश को जल्दी से जल्दी अंग्रेजों की दासता से आजाद कराना चाहती थीं। उन्हें अनेक कष्ट सहने पड़े। कई बार अंग्रेज सरकार ने उन्हें जेल में बंद किया। सन् 1930 में कांग्रेस का अधिवेशन पंडित जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में हुआ। इसे अधिवेशन को स्वाधीनता संघर्ष में मील का पत्थर माना जा सकता है। पूर्ण स्वराज्य को अपना महान राष्ट्रीय लक्ष्य माना गया। इस लक्ष्य को पाने के लिए गांधी जी ने बहुत से आंदोलनों की योजना बनाई।

साबरमती आश्रम में गांधी जी और कांग्रेस के बहुत से नेता इकट्ठे हुए। गांधी जी चाहते थे कि आंदोलन तो चले किंतु किसी प्रकार की हिंसा न भड़के। वे चाहते थे कि अहिंसा का अस्त्र लेकर ही यह लड़ाई लड़ी जाए। वे चाहते थे कि सत्याग्रह आंदोलन और तेज हो। विदेशी चीज़ों का पूरी तरह से बहिष्कार हो। उन्होंने नमक कानून तोड़ने का निश्चय किया। नमक बनाने पर पाबंदी थी। भारतीयों पर नमक कर भी लगा हुआ था। उन्होंने सरकार से अनुरोध किया कि सरकार इस कर को समाप्त कर दे। नमक कर साल भर में तीन दिन की आय के बराबर बैठता था। सरकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने गांधी जी की चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया। गांधी जी ने मार्च 1930 में नमक कानून तोड़ने का निर्णय लिया। गांधी जी की सारी योजनाओं में सरोजिनी पूरी तरह शामिल रहीं।

नमक आंदोलन

12 मार्च 1930 को डांडी यात्रा शुरू हुई। 6 अप्रैल को जब गांधी जी नमक कानून तोड़ने समुद्र तट पर गए तो सरोजिनी उनके साथ थीं। उस समय वह चिल्ला उठी– 'मुक्तिदूत को प्रणाम'।। उसके बाद हजारों स्त्री-पुरुष समुद्र में घुस गए और नमक बनाने का काम शुरू हो गया। सरोजिनी नायडू बड़े उत्साह से इस आंदोलन में भाग ले रही थीं। उन्होंने कहा, 'अब औरतें औरत होने का बहाना लेकर आंदोलन से अलग नहीं रह सकतीं। उन्हें आजादी की लड़ाई में खतरों और बलिदान में पुरुषों की तरह बराबर हिस्सा लेना होगा।', नमक कानून तोड़ने के लिए 25 हजार स्वयं-सेवक इकट्ठे हो गए थे। बीमार होतें हुए भी सरोजिनी ने दल का नेतृत्व किया और शांत होकर समुद्र की ओर चलने के लिए कहा। पुलिस ने उन्हें घरसाना नमक कारखाने के पास रोक दिया। जब लोगों ने देखा कि वे आगे नहीं बढ़ सकते तो वे रेतीली सड़क पर बैठ गए। तेज गर्मी और धूप थी। वे सब चारों ओर पुलिस से घिरे हुए थे। सामने से पानी की गाड़ी जा रही थी लेकिन वे प्यास से तड़प रहे थे। ऐसी स्थिति में सरोजिनी अस्वस्थ होते हुए भी उनको उत्साहित कर रही थीं। सरोजिनी ने अपने साथियों को उत्साहित करते हुए कहा, 'अगर तुम्हारी पिटाई हो जाए तो भी उसका बदला नहीं लेना चाहिए और न ही घूंसों से बचने के लिए हाथ उठाना चाहिए। गांधी जी का शरीर भले ही जेल में है, लेकिन आत्मा हमारे साथ है।' दल में इंकलाब ज़िंदाबाद के नारे लगने लगे। भीड़ नमक की क्यारियों की तरफ बढ़ने लगी। एक सरकारी अधिकारी सरोजिनी के पास पहुँचा। उनकी बांह पकड़ कर बोला, कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आपको बंदी बना लिया गया है'। वे हंसी और उसका हाथ छुड़ाते हुए कहा, 'मैं चलती हूँ, लेकिन मुझे छुओ मत।' बाद में उन्हें कारावास में भेज दिया गया।

गोल मेज सम्मेलन

पूरे भारत में गिरफ्तारियां होने लगीं। ब्रिटेन में सरकार बदल गई। उग्र नीतियों में कुछ नर्मी आई। जनवरी 1931 में गांधी जी और सरोजिनी को जेल से रिहा कर दिया गया। संघर्ष चलता रहा।

दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने गांधी जी और सरोजिनी नायडू 29 अगस्त 1931 को पानी के जहाज से लंदन गए। सरोजिनी ने इस सम्मेलन में भारत के लिए आवाज उठाई। भारत की महिलाओं के लिए आवाज बुलंद की। उन्होंने बहुत से महत्वपूर्ण विषयों पर बात की। गोलमेज के खत्म होते ही सरोजिनी को दक्षिणी अफ्रीका जाने वाले प्रतिनिधि मंडल का सदस्य नियुक्त करके वहाँ भेज दिया गया।

सरकार से टक्कर

सरोजिनी जब अफ्रीका से लौटीं तो वह कांग्रेस कार्यसमिति की अकेली सदस्या थीं जो जेल से बाहर थीं। उन्होंने कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष का भार संभाला। 3 मार्च, 1932 को एक वक्तव्य जारी किया, जिसमें उन्होंने कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को सरकार से टक्कर लेने पर बधाई दी। अहिंसा की लड़ाई चलती रही। हजारों पुरूष, महिलाएं और बच्चे जेल भेज दिए गए। 1932 में विदेशी कपड़े का आयात भी कम हो गया। सरकारी धमकियों और धरपकड़ के बाद भी, बाजारों में हड़तालें होती रहीं। सरोजिनी ने 6 अप्रैल से 13 अप्रैल 1932 तक प्रदर्शन और धरने का राष्ट्रीय सप्ताह मनाने का निर्णय लिया। 21 अप्रैल से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

27 अप्रैल 1932 तक डाकखानों का बहिष्कार करने के लिए डाक सप्ताह मनाने के आदेश जारी किए।

सरोजिनी नायडू ने उस समय बहुत सी योजनाएं बनाईं। वे अप्रैल के अंतिम सप्ताह में कांग्रेस का अगला अधिवेशन करना चाहती थीं। बहुत से प्रांतीय अध्यक्ष पकड़े जा चुके थे। आंदोलन के संचालन के लिए दूसरे लोगों को जिम्मेदारी दी गई। उन लोगों से सरोजिनी ने प्रतिनिधि भेजने के लिए कहा। अधिवेशन के कार्यक्रम के लिए तीन प्रस्ताव रखे गए :

1. कांग्रेस का लक्ष्य पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करना होगा।
2. सविनय अवज्ञा से संबंधित समिति की बैठक का प्रस्ताव।
3. गांधी जी को कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि और नेता के रूप में स्वीकार करना।

सरकार सरोजिनी की गतिविधियों को रोकना चाहती थी। उन्हें आदेश दिया गया कि वे पुलिस कमिश्नर की अनुमति के बिना बंबई नगर की सीमा को पार न करें। सरोजिनी ने इस आदेश पर ध्यान नहीं दिया। वे बंबई से चल दीं। सरकार ने उन्हें बांद्रा के स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिया। यरवदा जेल में भेज दिया गया। गांधी जी भी उसी जेल में थे। उन्होंने उपवास शुरू कर दिया। 8 मई, 1933 को सरोजिनी और गांधी जी दोनों को जेल से रिहा कर दिया गया।

1935 में कांग्रेस की स्वर्ण जयंती मनाई जा रही थी। सरोजिनी बंबई प्रांत की कांग्रेस समिति की अध्यक्ष थीं। उनका काम बहुत बढ़ गया था। सरोजिनी इस वर्ष बहुत व्यस्त रहीं। राजनीतिक गतिविधियां नये मोड़ लेती रहीं। आज़ादी की लड़ाई ने सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में उग्र रूप धारण कर लिया।

दूसरा विश्वयुद्ध शुरू हो गया था। चारों ओर स्थिति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनावपूर्ण थी। सरोजिनी शांति की स्थापना चाहती थीं। इस विश्व युद्ध में मानव जाति का युद्ध और भारत की पीड़ा उसके लिए समान थी। सन् 1940 में कांग्रेस ने अहिंसात्मक सविनय अवज्ञा का झंडा ऊंचा रखने के लिए व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू किया। इस सत्याग्रह के द्वारा वे गांधी जी के सिद्धांतों पर भी चल सकें और मुश्किल के समय में ब्रिटिश अधिकारियों को भी परेशानी न हो। साथ ही आजादी की लड़ाई भी चलती रहे। गांधी जी, जवाहर लाल, सरोजिनी और अनेक नेताओं को जेल भेज दिया गया। जेल में आना जाना चलता रहता था

भारत छोड़ो आंदोलन

जुलाई 1942 में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में 'भारत छोड़ो' आंदोलन का प्रस्ताव पास किया गया। कांग्रेस के इस अधिवेशन में बंबई में लगभग 30,000 दर्शकों ने भाग लिया। इसके बाद सरोजिनी, गांधी जी, कस्तूरबा और अनेक नेताओं को पुणे के आगा खां महल में नजरबंद कर दिया गया परन्तु 9 अगस्त 1942 को 'भारत छोड़ो' आंदोलन शुरु हो गया। देश भर में गिरफ्तारियां हुई। चार हजार लोग बंद कर दिए गए।

सरोजिनी को जेल की यह लम्बी यातना कई वर्ष झेलनी पड़ी। जेल उनका घर बन गया था। वहाँ से वह अपने बच्चों को पत्र लिखतीं। कस्तूरबा और गांधी जी का हाल लिखतीं। जून 1945 में सभी नेताओं को रिहा कर दिया गया। इसी वर्ष शिमला में सम्मेलन किया गया। इस सम्मेलन में जिन्ना पाकिस्तान बनाने के लिए अड़ गए। गांधी जी इसके लिए तैयार नहीं थे। यह सम्मेलन विफल हो गया।

धर्म के नाम पर भारत-विभाजन की बात जोरों कर चल पड़ी। जिन्ना ने यह घोषणा कर दी कि भारत के विभाजन के अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं है। उन्होंने मुसलमानों से कहा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वे 16 अगस्त 1946 को पाकिस्तान बनाने के लिए सीधी कार्यवाही में हिस्सा लें। देश में साम्प्रदायिक दंगे भड़कने लगे। दंगों का प्रभाव बंगाल और बिहार पर भी पड़ा। एक अंतरिम सरकार की स्थापना हो गई। उसमें मुस्लिम लीग भी शामिल हुई। उसका प्रयोजन नये वाइसराए लार्ड माउंटबेटन की अध्यक्षता में भारत के विभाजन की रूपरेखा बनाना और कार्यवाही तय करना था। अंग्रेज सरकार ने भारत विभाजन का निर्णय ले लिया।

आज़ादी की प्राप्ति

संविधान सभा में 11 दिसंबर 1946 को स्वतंत्र भारत का संविधान बनाने के लिए कार्यवाही शुरू की गई। उसमें देश के बड़े-बड़े नेताओं ने भाग लिया। वातावरण बहुत सहज और सरल था। सरोजिनी ने बहुत हंसमुख ढंग से बातचीत शुरू करते हुए कहा, 'भारत का संविधान भारत के प्रत्येक मनुष्य की स्वतंत्रता और मताधिकारपूर्ण नागरिकता का संविधान है भले ही वह राजकुमार हो या किसान।'

22 मार्च 1947 को नई दिल्ली में एशियाई संबंध सम्मेलन हुआ। उसकी अध्यक्षता सरोजिनी नायडू ने की। दीवार पर एशिया का मानचित्र टंगा था। उस सम्मेलन में एशिया के अनेक देशों ने भाग लिया। एशियाई देशों के प्रतिनिधियों और विशेष व्यक्तियों से हाल भरा हुआ था। सरोजिनी नायडू ने धार्मिक ओजपूर्ण अध्यक्षीय भाषण दिया। उन्होंने कहा, 'हम एशिया के लोग संकटों से पराजित और किसी भी बात से निरुत्साहित हुए बिना एक साथ आगे बढ़ेंगे। .... मुझे विश्वास है कि जो कुछ मंगलकारी है वह नष्ट नहीं हो सकता।'

15 अगस्त 1947 को महान् नेताओं के प्रयास से भारत आजाद हो गया। सरोजिनी नायडू ने इस आज़ादी की लड़ाई में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत रुचि ली। उनका स्वास्थ्य प्रायः खराब रहता था किंतु वह उसकी परवाह नहीं करती थीं। वह तो देश को आज़ाद कराने के लिए लगातार काम करती रहतीं। एक जगह से दूसरी जगह यात्राएं करती रहतीं। उन्हें अपने घरबार की परवाह भी नहीं थी। वह देश की आजादी को बहुत महत्व देती थीं। उसकी तुलना में उनके लिए घर परिवार का कोई महत्व नहीं था।

ऐशो-आराम और अमीरी में पली हुई सरोजिनी ने देश को आज़ाद कराने के लिए तरह-तरह की परेशानियां उठाईं। कठिनाइयों का सामना किया। वह कभी निराश नहीं हुईं। इस संघर्ष में बराबर लगी रहीं। उन्होंने अंग्रेजी वातावरण देखा था। अंग्रेजों के साथ वे रही थीं। वे जानती थीं कि आज़ादी कितनी महत्वपूर्ण चीज है। अपने परिश्रम, त्याग और लगन से उन्होंने अपने देश की धरती को आज़ाद कराया। दासता की शृंखला को तोड़ फेंका। उन्होंने देश के आज़ाद होने पर गर्व से अपना सिर ऊंचा उठाया।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

8

महिला आन्दोलन

सरोजिनी नायडू भारत की उन महान महिलाओं में से एक हैं। जिन्होंने अपने महिला होने पर सदा गर्व किया है। उनका विश्वास था कि किसी भी देश की उन्नति तभी हो सकती है जब उस देश की महिलाएं पढ़ी-लिखीं, हों। जीवन में पुरुषों के समान महत्वपूर्ण स्थान की अधिकारी हों। उन्हें पूरा सम्मान और समानता मिले। सरोजिनी प्रारंभ से ही सुधारवादी थीं। वह महिलाओं की समस्याओं में रुचि लेने लगी थीं।

सन् 1902 में जब सरोजिनी केवल 23 वर्ष की थीं, उन्होंने बंबई की एक विराट जनसभा और अनेक महिला-सभाओं में भाषण दिए। इन भाषणों में उन्होने बहुत से विषयों को उठाया जिनमें महिलाओं की कमजोर समाजिक स्थिति, बाल-विवाह, विधवा-विवाह, पुरुषों की एक से अधिक शादी और नई शिक्षा महत्वपूर्ण थे। उन्होंने बड़े भावुकतापूर्ण ढंग से महिलाओं से कहा कि वे घर से बाहर आएं। काम में जुट जाएँ। व्यवसाय आदि में भी भाग लें। परंपरा की जंजीरों को तोड़ डालें। अपने चारों ओर फैली हुई गरीबी को देखें। अस्पतालों में पड़े रोगियों की सेवा करें। बच्चों की शिक्षा की तरफ ध्यान दें। अनाथों और विकलांगों की सहायता करें। सरोजिनी का भाषण बहुत चोट

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वाला था। साथ ही मानवता और स्नेह से भरा हुआ था। सरोजिनी में अपनी बात कहने की वह अपार शक्ति थी कि सुनने वाला उनकी बात को बहुत ध्यान से सुनता। उस पर विचार करता। देश में नारी स्वतंत्रता के आंदोलन को आगे बढ़ाने में उनकी भाषण कला ने बहुत सहयोग दिया।



पं. जवाहर लाल नेहरू के साथ सरोजिनी नायड

सरोजिनी से पहले भी पंडित रमाबाई, डा. श्रीमती मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी, रमाबाई रानाडे आदि अपने अपने क्षेत्रों में नारी की दशा को सुधारने के लिए काम कर रही थीं। सरोजिनी की विशेषता यह थी कि वे अपने श्रोताओं के हृदय को स्पर्श करने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की क्षमता रखती थीं। सुनने वाले उनकी बात सुनकर प्रभाव ग्रहण करते, मंत्रमुग्ध हो जाते। दूसरों को काम करने के लिए प्रेरणा देने की शक्ति उनमें थी। उन्होंने महिलाओं से संबंधित सामाजिक बुराइयों का बहुत स्पष्टता और विस्तार से वर्णन किया और विरोध भी। उनके इस कार्य ने एक ऐसे नेतृत्व को जन्म दिया जिससे महिला स्वतंत्रता आंदोलन आगे बढ़ा। उसने अखिल भारतीय स्वरूप धारण कर लिया।

1906 में कलकत्ता में भारतीय सामाजिक सम्मेलन के अवसर पर महिलाओं की शिक्षा के संबंध में एक प्रस्ताव रखा गया। सरोजिनी नायडू ने इस प्रस्वाव में संशोधन करने के लिए कहा। उन्होंने कहा, 'हिंदू महिलाओं की अपेक्षा भारतीय महिला शब्द प्रयोग करना चाहिए।' वे भारतीय महिलाओं के बीच से भेदभाव को दूर करना चाहती थीं। महिलाओं की समस्याओं के बीच में वे जाति-धर्म अथवा मत को नहीं लाना चाहती थीं।

महिला शिक्षा के संबंध में उन्होंने कहा, 'संसार में भारत एक ऐसा देश है जो प्रथम शताब्दी के आरंभ में एक महान् सभ्यता के रूप में विकसित था जिसने संसार की प्रगति में महान योगदान दिया है। यहाँ विदुषी और प्रतिभा संपन्न महिलाओं के उदाहरण मिलते हैं। आज महिलाओं की स्थिति खराब हो गई है। अब समय आ गया है कि इस दिशा में हम कोई ठोस कदम उठाएँ। फलदायक परिणाम प्राप्त करें।'

सरोजिनी ऐसा अनुभव करती थीं कि राष्ट्रीय आदर्श को पाने के लिए आंदोलन 'महिला प्रश्न' के चारों ओर केंद्रित किया जाए। उन्हें इस बात पर खेद था कि महिला शिक्षा की अनिवार्यता को सर्वसम्मति से स्वीकृति तक नहीं मिली। वे इस बात से बहुत दुखी थी कि क्या किसी व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह दूसरे को स्वच्छ वायु के सेवन के अधिकार से वंचित कर दे। भारतीय नारी के मामले में पुरुषों ने यही किया है। यही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण है कि आज भारतीय पुरुष की यह दुर्दशा हो गई है। उन्होंने पुरुषों को यह जिम्मेदारी सौंपी कि वे महिलाओं को उनके पुराने अधिकार लौटा दें। राष्ट्र की सच्ची निर्माता महिलाएँ हैं, पुरुष नहीं। महिलाओं के सक्रिय सहयोग के बिना प्रगति के समस्त प्रयास एकदम बेकार रहेंगे।

सन् 1916 में सरोजिनी नायडू ने मुस्लिम महिला अधिकार की बात उठाई। वह लखनऊ में मुस्लिम लीग के सम्मेलन में भाग ले रही थीं। मुस्लिम लीग के सम्मेलन में उन्होंने कहा, 'मैं नई मुस्लिम पीढ़ी को वफादार मित्र मानती हूँ। मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों की समर्थक हूँ। मैं उनके अधिकारों के लिए मुस्लिम पुरुषों से लड़ी हूँ। इसलाम ने तो बहुत पहले ही महिलाओं को अधिकार दे दिए थे। आपने उन्हें उन अधिकारों से वंचित कर रखा है।'

उन्होंने हमेशा महिला शिक्षा पर बहुत बल दिया। महिला शिक्षा के संबंध में उनका विचार था कि संकीर्ण मस्तिष्क वाले लोग कहते हैं कि शिक्षा महिलाओं को साहसिक बना देती है।अतः यह निंदनीय है। भारत को इस बात का गर्व है कि महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक साहसी और वीर रही हैं। किसी भी देश के उत्थान के लिए स्त्री-पुरुष के बीच सहयोग आवश्यक है। एक पहिये की गाड़ी ठीक से नहीं चल पाती। पर्दा प्रथा का यह मतलब नहीं कि मस्तिष्क और आत्मा पर भी पर्दा डाल दिया जाये। रूढ़ियों को समाप्त कर देना चाहिए। भारत की आत्मा तभी मुक्त होगी जब नारी मुक्त होगी।

विदेशों में भारतीयों पर होने वाले अत्याचारों से वे बहुत दुखी थीं। विदेशों में गिरमिटिया श्रमिकों पर बहुत अत्याचार हो रहे थे। उनमें महिलाएँ भी थीं उनके संबंध में उन्होंने कहा– 'महिलाओं ने विदेशों में जो कष्ट भोगे हैं उसकी लज्जा को अपने हृदय के रक्त से धो डालो। आपने जो शब्द यहाँ सुने हैं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने आपके भीतर आग सुलगा दी होगी। हे भारत के पुरुषों इस आग को गिरमिटिया प्रथा की चिता बना डालो। आज मैं रोऊंगी नहीं, हालांकि मैं एक स्त्री हूँ और यद्यपि अपनी माताओं और बहनों के अपमान को आप महसूस कर रहे होंगे तथापि इस अपमान को मैं नारी जाति का अपमान मानती हूं।'

उन्होंने बार-बार महिलाओं के सुधार के लिए आवाज उठाई, अनेक प्रयत्न किए। वह जानती थीं कि भारत में महिलाओं की गौरवशाली परंपरा रही है। सीता अपने सतीत्व को दी गई चुनौती को सहन न कर सकीं। उन्होंने धरती माता से विनती की कि वह उन्हें अपने भीतर समा लें। सरोजिनी ने इस उदाहरण को भी पेश किया।

मार्च 1918 में जलंधर में 'महिलाओं की स्वतंत्रता' के विषय पर उन्होंने बहुत जोरदार भाषण दिया। 'भारत की भावी महिलाओं की कल्पना' विषय पर भी उन्होंने अपने विचार प्रकट किए। अप्रैल 1918 में लांहौर में 'महिलाओं की राष्ट्रीय शिक्षा' के बारे में भी भाषण दिए। वे जानती थीं कि पुरुष नारी प्राचीन आदर्शों को महत्व देते हैं। सावित्री अपने पति के प्राणों को वापस प्राप्त करने के लिए यमराज के पास गई यह बात पुरुष मानते हैं फिर आधुनिक सावित्री को उस शक्ति से वंचित रखते हैं जिसके द्वारा वह राष्ट्रीय जीवन को मृत्यु के गर्त से उबार सकती है।

सरोजिनी नायडू ने महिला शिष्ट मंडल का नेतृत्व भी किया। वह स्त्रियों के लिए पुरुषों की तरह समान मताधिकार की मांग कर रही थीं। ब्रिटेन की महिलाओं ने इस समान मताधिकार को प्राप्त कर लिया था। यद्यपि इसकी बहुत तीव्र आलोचना और विरोध पुरुष वर्ग में हुआ। भारत में पुरुषों के बीच सरोजिनी को समान हैसियत प्राप्त थी। वे उच्चतम परिषदों में भाग लेती थीं। स्वतंत्रता संग्राम में हजारों महिलाएं भाग ले रही थीं। उसमें उन्हें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफलता भी मिली। 15 दिसंबर को सरोजिनी और उनके नेतृत्व में चौदह प्रतिनिधि महिलाएं मांटेग्यू और वायसराय से एक शिष्ट मंडल के रूप में मिलीं। उन्हें एक ज्ञापन दिया। इस ज्ञापन में स्वशासन की मांग की गई। इस बात पर बल दिया गया कि महिलाओं को नागरिक के रूप में मान्यता मिले। लिंग के आधार पर भेदभाव समाप्त हो। लड़कियों को शिक्षा की पूरी सुविधा हो। उनके लिए मेडिकल कालेज खोले जाएँ, बाद में जो सुधार योजनाएँ सामने आईं उनमें महिला मताधिकार की सिफारिश नहीं थी। उसमें कहा गया था कि जब तक महिलाओं को पर्दे में रखने की प्रथा में ढिलाई नहीं आती तब तक महिला मताधिकार से कोई लाभ नहीं होगा। 1919 में एक और महिला शिष्ट मंडल महिला मताधिकार के संबंध में साउथ बरो कमीशन से मिला। जुलाई 1919 में सरोजिनी अखिल भारतीय होमरूल लीग की सदस्या के रूप में इंगलैंड गईं। मांटेग्यू चेम्सफोर्ड प्रस्ताव उस समय वहाँ विचाराधीन था। उसमें महिला मताधिकार की बात भी थी। सरोजिनी ने इंगलैंड पहुँच कर विभिन्न भारतीय राजनीतिक संगठनों को एकजुट किया। उन्होंने एक संयुक्त शिष्ट मंडल बनाया। यह मंडल इस संबंध में मांटेग्यू से मिला। 6 अगस्त 1919 को वे भारतीय सुधारों पर विचार करने के लिए बनाई गई संयुक्त समिति से मिलीं। अपने प्रतिवेदन में उन्होंने महिला मताधिकार के पक्ष में तर्क दिए थे। उन तर्कों का प्रभाव पड़ा। समिति भी उनसे बहुत प्रभावित हुई।

सरोजिनी यह बात मानती थीं कि जहाँ तक नागरिकों के राजनीतिक तथा दूसरे अधिकारों का प्रश्न है मनुष्य शब्द में महिलाओं का भी समावेश माना जाना चाहिए। उनके अनुसार महान् राष्ट्रीय संकटों में पुरुष ही बाहर जाता है। नारी की आशावादिता और प्रार्थना से ही पुरुष को शक्ति मिलती है। नारी की प्रेरणा से ही वह एक सफल योद्धा बनता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1925 में जब सरोजिनी नायडू कांग्रेस की अध्यक्ष बनीं तो उसको उन्होंने भारत की प्राचीन परंपरा के समान नारी को दिया जाने वाला सम्मान माना। उसके लिए आस्था को उस चिंगारी को सुलगाने की बात की जिसने सीता और सावित्री का मार्ग प्रकाशित किया। उन्होंने कहा, 'भारतीय माता के रूप में मैंने पालने झुलाए हैं और लोरिया गाई हैं। अब मैं स्वतंत्रता की ज्योति जगाऊंगी।' उन्होंने अपने इस काम को घरेलू कार्यक्रम माना जिसका उद्देश्य भारत मां को उसका सही स्थान दिलाना है। जिससे वह अपने घर की स्वामिनी और संरक्षिका बन सके। भारत मां की आस्थावान बेटी के रूप में मां के घर को व्यवस्थित करने की बात कही। विभिन्न संप्रदायों और धर्मों को जोड़ कर संयुक्त परिवार का आदर्श रूप बनाने का सपना देखा। दीन-हीन संतान को समर्थ बनाने का संकल्प लिया। अतिथि सत्कार को अपनी परंपरा माना। सारे कार्यक्रम को परिश्रम और साहस से पूरा करने की ठानी।

कानपुर में होने वाले कांग्रेस के अधिवेशन में सरोजिनी नायडू के इस सुझाव से महिलाएँ बहुत उत्साहित हुई। उन्होंने राष्ट्रीय गतिविधियों में खुल कर भाग लेना शुरू कर दिया। 1926 में अक्तूबर में अनेक महिला संगठनों ने मिलकर एक अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की स्थापना की। इस सम्मेलन का उद्‌देश्य था महिलाओं को स्वतंत्रता दिलाना, बाल-कल्याण, शिक्षा और उन सारे कार्यों में रुचि लेना जो महिलाओं के स्तर को ऊंचा उठा सकें। महिलाओं में यह जागरण सारोजिनी नायडू की वजह से ही आया। उन्होंने महिलाओं के उत्साह को बहुत बढ़ाया। उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

1928 में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन ने सरोजिनी नायडू अखिल प्रशांत क्षेत्रीय महिला सम्मेलन में भाग लेने के लिए अपना प्रतिनिधि चुन कर होनोलूलू में होने वाले सम्मेलन में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेजा। सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए वे अमेरिका गईं। सरोजिनी ने घोषणा की, 'वह समय अब आ गया है जब भारतीय नारी जाति के विचार आकाश में अग्नि अक्षरों में उभरेंगे। उनकी लपटों को कोई बुझाएगा नहीं।'

सन् 1930 में सरोजिनी अखिल भारतीय महिला शिक्षा सम्मेलन की अध्यक्ष चुनी गईं। उन्होंने भारत की महिलाओं से कहा, कि वे नारी जाति की एकता की आवश्यकता को महसूस करें। राष्ट्र की सच्ची आधारशिला बनें।

सरोजिनी ने भारत की महिलाओं के लिए आवाज उठाई। इससे भारत के महिला संगठनों में नई चेतना पैदा हुई। उन संगठनों के नेताओं ने एक सम्मिलित सम्मेलन बुलाने की योजना बनाई। अखिल भारतीय महिला सम्मेलन, भारतीय महिला संघ और भारतीय राष्ट्रीय महिला परिषद् आदि संगठनों ने अपनी आवाज को प्रभावशाली बनाने का संकल्प किया। एक सम्मिलित सम्मेलन बुलाया। लिंग भेदभाव से दूर हट कर वयस्क मताधिकार की मांग की गई। यह प्रस्ताव सभी संबंधित अधिकारियों के पास भेजा गया। बंबई के अखिल भारतीय महिला अधिवेशन में सरोजिनी ने कहा था, 'वह केवल नारी आंदोलनकारी नहीं हैं। उन्होंने नारी के लिए विशेष अधिकारों की मांग नहीं की। यह मांग उन्हें हीन ठहरा सकती थी। भारत में ऐसा कभी हुआ भी नहीं। नारी हमेशा राजनीतिक परिषदों और युद्ध क्षेत्र में पुरुष के साथ कंधा मिलाकर चली है।'

1935 में ब्रिटिश सरकार ने इंडिया बिल पेश किया। ब्रिटिश संसद में भी यह बिल पारित हुआ। आने वाले आम चुनाव में इसने महिला उम्मीदवारों के लिए रास्ता खोल दिया। सरोजिनी ने हमेशा महिलाओं का नेतृत्व किया। दिल्ली में लेडी इरविन कालेज की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। 1934 में उन्होंने मद्रास में महिला भारतीय संघ में भाषण दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने इस सभा में महिलाओं के सामने बहुत से प्रश्न रखे। वह महिलाओं को वास्तविक स्थिति का सामना करने के लिए तैयार करना चाहती थीं। वे चाहती थीं कि महिलाएँ काम करें। अनाथ बच्चों की चीत्कार को सुनें। विधवाओं की दशा को सुधारें। अन्याय का डटकर मुकाबला करें। दासता से अपने आप को मुक्त कराएँ देश से अशिक्षा को दूर करें। गाँवों की स्थिति में सुधार लाएँ। वे चाहती थी कि महिलाएँ स्वदेशी आंदोलन को तीव्र और सफल बनाएँ। उनमें किसी प्रकार के भय की भावना न हो।



सरोजिनी नायडू कार्यकर्ताओं के बीच

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करांची के अखिल भारतीय महिला सम्मेलन के अधिवेशन में उन्होंने एक बार फिर नारी को जगाया। एकता और समन्वय की बात की। वह चाहती थीं कि भारतवासी सब एक होकर रहें चाहें वह किसी भी जाति और धर्म के हों। मनुष्य को सबसे पहले वे मनुष्य के रूप में देखना चाहती थीं। उनके विचार में नारी नारी से अलग नहीं हो सकती। उसमें सत्य का वह तत्व है जिस पर मानव जाति की सभ्यता टिकी है।

सरोजिनी नायडू का अप्रैल 1944 में भारत के सौ महिला संगठनों की ओर से अभिनंदन किया गया। उन्होंने बंगाल के अकाल के बचाए गए बच्चों के लिए बनाए गए 'बाल सुरक्षा कोष' की बैठक की अध्यक्षता की। यही संगठन आगे चलकर 'भारतीय बाल कल्याण परिषद' बना।

सरोजिनी नायडू जीवन भर स्त्रियों की आजादी के लिए कोशिश करती रहीं। उन्होंने स्त्रियों की दशा सुधारने के लिए बहुत कोशिश की। वह स्वयं उनकी प्रेरणा स्रोत बनीं। उनको उदार दृष्टि दी। खुले प्रांगण में रहने की सीख दी। उनमें सेवा, त्याग और ममता के भाव जगाए। यही कारण है कि सरोजिनी नायडू का जन्म दिवस तेरह फरवरी देश में 'नारी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

9

प्रथम महिला राज्यपाल

15 अगस्त 1947 को देश आज़ाद हुआ। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल डा. विधान चंद्र राय बनाए गए थे। उनकी आंखों में कुछ कष्ट था। वह चिकित्सा के लिए अमेरिका चले गए। सरोजिनी नायडू को उत्तर प्रदेश का कार्यकारी राज्यपाल बना दिया गया। उस वक्त उन्होंने कहा था, 'आप जंगली चिड़िया को पिंजरे में बंद कर रहे हैं।' डा. विधानचंद्र राय जब अमेरिका से भारत लौटकर आए तो उन्होंने देखा कि सरोजिनी नायडू अपने इस पद के कार्यभार को बहुत खूबी के साथ निभा रही हैं। डा. विधानचंद्र राय ने राज्यपाल के पद से त्यागपत्र देने का निश्चय कर लिया। सरोजिनी नायडू भारत के सबसे बड़े राज्य की राज्यपाल बन गईं। वह प्रथम महिला राज्यपाल थीं।

उन्होंने 15 अगस्त 1947 को देश के आजाद होने की घोषणा अपने राज्य में बहुत कलात्मक ढंग से की। उनका शपथ ग्रहण समारोह बहुत ही रंगीन था। सारे लोग भारतीय पोशाक पहने थे। सरोजिनी नायडू ने विदेशी पोशाक पर पाबंदी लगा दी थी। तरह-तरह की पगड़ियाँ ओर टोपियाँ नजर आ रही थीं। इस अवसर पर देश के सभी धर्म-ग्रंथों से पाठ हुआ। राज्यपाल के शपथ ग्रहण के समय सिख, मुस्लिम, जैन, बौद्ध, हिंदू तथा ईसाई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रार्थनाएं गाई गईं। हिंदी के प्रबल समर्थक राज्य में प्रथम राज्यपाल सरोजिनी नायडू ने अपना मार्मिक भाषण अंग्रेजी में प्रस्तुत किया। इस अवसर पर उन्होंने संसार के स्वतंत्र देशों को संबोधित किया। अपने देश के संघर्ष की चर्चा की। महिलाओं और युवाओं के संघर्ष की बात उठाई। इसे उन्होंने वृद्धों, धनियों, निर्धनों, शिक्षितों, अशिक्षितों, स्त्रियों, अछूतों, संतों सबका संघर्ष माना। उनके अनुसार देश का नया जन्म हुआ। विश्व के राष्ट्रों का उन्होंने अभिनंदन किया। उनके देश की छत हिम की है। दीवारें समुद्र की हैं, उसके दरवाजे सब के लिए खुले हैं। भारत की स्वतंत्रता को उन्होंने समस्त संसार के लिए प्रदान किया और भविष्यवाणी की कि यह देश भविष्य में कभी नष्ट नहीं होगा और संसार को शांति की दिशा में ले जाएगा।

देश के दो टुकड़े हो गए थे। उनका हृदय देश की जनता के लिए दुखी था। सरोजिनी के सपनों का भारत सशक्त था किंतु यहाँ देश की स्थिति कुछ बदली हुई थी। कभी-कभी वह अपनी तुलना पिंजरे में बंद पंछी से करती थीं। वास्तव में भारत कोकिला लखनऊ के राजभवन रूपी स्वर्ण पिंजरे में आ गई थी। उन्होंने इस राजभवन को एक सुंदर घर में बदल डाला था। उस सरकारी निवास को गरिमा और महत्ता दी।

सरोजिनी का कवि मन देश के बटवारे की स्थिति, जनता के दुख और साम्प्रदायिक दंगों के विषय में सुन कर दुखी हो उठता। उस सुंदर भव्य भवन में आने वाले अंसख्य लोगों को उनकी इस व्यथा का बोध नहीं हो पाता। वे सरोजिनी नायडू को बरामदे में धूप में बैठे कहानियां पढ़ते और रंगीन चाय समारोहों की अध्यक्षता करते देखते। वे उन्हें मित्रों और भेंटकर्ताओं से विनोद और परिहास करते या चुटकले और संस्मरण सुनाते हुए देखते। उनका राजभवन राजसी ठाठबाट से सुसज्जित था। उसका भोजन मज़ेदार और शानदार था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजभवन के कर्मचारी सरोजिनी नायडू को बहुत प्यार करते थे। सरोजिनी भी अपने कर्मचारियों के साथ बहुत स्नेहपूर्ण व्यवहार करती थीं। उन्होंने कभी कठोरता से उन पर शासन नहीं किया। वे जहाँ भी होतीं उस परिस्थिति को आत्मसात् कर लेतीं और वहाँ जो उपलब्ध होता उससे काम चला लेतीं, चाहे जेल हो या घर। राजभवन में सब सुविधाएं उपलब्ध थीं। बचपन को निज़ाम के हैदराबाद में गुजारने वाली सरोजिनी के जीवन में भव्यता का आ जाना स्वाभाविक ही था।

केंद्रीय शिक्षा बोर्ड की बैठकों के दौरान मौलाना आजाद, हुमायूं कबीर आदि उनके अनेक मित्र राजभवन में ठहरते। भाषा के प्रश्न को लेकर भी वे चिंतित रहतीं। उनके शिक्षा मंत्री हिंदी के बहुत बड़े हिमायती थे। वह चाहते थे कि हिंदी को उर्दू तथा अंग्रेजी दोनों का स्थान प्राप्त हो। उत्तर प्रदेश उर्दू का गढ़ था। उसके भविष्य के बारे में अनिश्चितता थी। शिक्षा बोर्ड का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा, 'मैंने लोगों को यह कहते हुए सुना है कि उर्दू पाकिस्तान की भाषा है, लेकिन याद रहे कि वह सिंध में नहीं भारत में जन्मी थी।' बोर्ड की बैठक के समय संपूर्णानंद और गोविंद वल्लभ पंत ने उर्दू को क्षेत्रीय भाषा का रूप नहीं देने दिया। सरोजिनी को इस बात की चिंता बराबर बनी रही यदि मुसलमानों की भाषा की सरकारी मान्यता छिन गई तो उनकी क्या दशा होगी।

9 दिसंबर 1947 को लखनऊ विश्व-विद्यालय के दीक्षांत समारोह में उन्होंने भाषण दिया। वह भाषण कभी पहले से तैयार नहीं करती थीं। उन्होंने कहा, 'मुझे तो भाषण देने के बाद पता चलता है कि मैंने क्या कहा है।' इस अवसर पर उन्होंने विद्यार्थियों से नये भारत का निर्माण करने के लिए कहा। वे ऐसे भारत की कामना करती थीं जो सब प्रकार के भेदभाव और वैमनस्य से दूर हो। उसमें एकता और भाईचारे की भावना हो। वे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतंत्रता को मानव जाति के लिए सबसे बड़ा दायित्व मानती थीं। इसी दीक्षांत समारोह के अवसर पर उन्होंने कहा, 'अपनी प्रतिज्ञा में आपने मानव जाति की सेवा का जो व्रत लिया है उसके प्रति यह तो विश्वासधात होगा कि आप अपनी डिग्रियों और डिप्लोमा का उपयोग महज अपने लाभ के लिए करें। भारतीय युवा का कर्त्तव्य सही दृष्टिकोण वाले भारत के इतिहास का नव निर्माण करना है। संसार में युवा मेरे समनों को, मेरे अधूरे सपनों को पूरा करेंगे। हम विभाजन की नहीं एकता की बात करें। घृणा की नहीं प्रेम की बात करें। अधिकारों की ही नहीं कर्त्तव्य की बात करें।

30 जनवरी 1948 को गांधी जी की हत्या का समाचार जब सरोजिनी नायडू को मिला तो वह कराह उठीं। गांधी जी उनकी प्रेरणा, सहयोगी, गुरू और बहुत कुछ थे। उन्होंने राष्ट्र के नाम संदेश दिया। गांधी जी हिंदू-मुस्लिम एकता बनाए रखना चाहते थे। सरोजिनी ने उनकी मृत्यु से उनकी विजय को पहचान लिया था। गांधी जी हमेशा यह मानते थे कि मनुष्य को मौत का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। सरोजिनी ने कहा, 'मेरे पिता विश्राम मत करो। हमसे हमारी प्रतिज्ञा का पालन कराओ, हमें शक्ति दो कि हम अपने वचन निभा सकें।'

बनारस में आयोजित अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन के द्वितीय अधिवेशन का उद्घाटन सरोजिनी नायडू ने किया। इस अवसर पर उन्होंने लेखकों को चेतावनी दी, 'हम अपने अंधविश्वास को भुलाकर लिखने में असमर्थ रहे हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि आज हमारे बीच फूट विद्यमान है। आप ज़ो कुछ भी लिखें वह जीवन की सच्ची और यथार्थ तस्वीर होनी चाहिए।'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरोजिनी ने अपने जीवन के इस अंतिम पद को बड़ी गरिमा के साथ निभाया। उनके इस महान व्यक्तित्व के कारण ही लखनऊ का राजभवन संस्कृति, कला, मनोरंजन, कर्म और अंतर्राष्ट्रीय मिलन का केंद्र बन गया। अपने पद की शालीनता, स्नेह, उदार अतिथि सत्कार को सरोजिनी नायडू ने बराबर बनाए रखा। बड़ी सफलता से उन्होंने राज्यपाल के इस पद का निर्वाह किया।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

10

अंतिम यात्रा

सरोजिनी नायडू 13 फरवरी 1949 को अपने जीवन के 70 बसंत देख चुकी थीं। लगातार परिश्रम करते-करते वह काफी थक गईं थीं। वैसे भी उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा कभी नहीं रहा। वह प्रायः बीमार रहती थीं। उनकी इच्छाशक्ति बहुत प्रबल थी उसके सहारे वे भी लगातार काम करती रहतीं और उन्होंने आज़ादी की लड़ाई भी लड़ ली। उस लड़ाई में उन्होंने विजय भी पाई किंतु खिन्न मन के साथ।

सरोजिनी 13 फरवरी को दिल्ली गईं। वह राष्ट्रपति भवन जाने के लिए कार में बैठ रही थीं। उनका सिर कार की नीची छत से टकरा गया। यह आघात उनके लिए घातक बन गया। वह अपना कार्य नियमित रूप से करती रहीं। उनका सिर बुरी तरह दुख रहा था। उसमें बहुत पीड़ा हो रही थी। 15 फरवरी को वह लखनऊ लौट आईं।

उनके सिर में बराबर दर्द होता रहा। परिवार का कोई सदस्य उनके पास न था। पद्मजा को राजा जी (राजगोपालाचारी) के स्वागत की तैयारी करने के लिए उन्होंने इलाहाबाद भेज दिया। दूसरी बेटी लीलामणि दिल्ली में विदेश विभाग में थी। बेटा और पति हैदराबाद में। परिवार का कोई भी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्ति उस समय उनके पास न था। 20 फरवरी को विधानचंद्र राय सरोजिनी नायडू को देखने लखनऊ आए। वे उनको देख कर बहुत खुश हुईं। उनकी हालत में कुछ सुधार आया। 18 तारीख से उन्हें आक्सीजन दिया जा रहा था क्योंकि सांस लेने में कुछ कठिनाई हो रही थी। वह पूरी तरह सो नहीं पाती थीं। 1 मार्च को उन्हें रक्त चढ़ाया गया। उसके बाद वह अराम से सो गईं। जागने पर उन्होंने नर्स से गाना सुनाने को कहा। नर्स जब गाना सुना चुकी तो उन्होंने नर्स से कहा, 'मैं चाहती हूँ मुझ से कोई बात न करे।' उन्होंने फिर किसी से बात नहीं की। 2 मार्च को प्रातः साढ़े तीन बजे उन्होंने इस संसार से विदा ले ली। उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर सारा देश शोक में डूब गया। राजभवन का झंडा झुका दिया गया। राजभवन उनके चाहने वालों से भर गया। वहाँ भारी भीड़ जमा हो गई। भारत के नेता वहाँ इकट्ठे हुए। उनके परिवार के सदस्य उनके पास खड़े थे। उनकी अर्थी के पास पंडित जवाहरलाल नेहरू खड़े हुए थे। शाम को सवा चार बजे अर्थी निकली। उनका शरीर तिरंगे झंडे में लिपटा हुआ था। उनकी अर्थी को पंडित नेहरू और दूसरे लोगों ने तोपगाड़ी में रखा। उनके बच्चे उनके चारों तरफ खड़े थे। शोक मनाने वालों में लेडी माउण्टबेटन भी थीं। गोमती के किनारे अंतिम संस्कार किया गया। बड़े बेटे जयसूर्य ने चिता में अग्नि दी। आखिरी बिगुल बजाया गया। राजगोपालाचारी ने अंतिम श्रद्धांजलि दी। इस प्रकार भारत की महान् नारी ने इस संसार से विदा ली। लखनऊ में गोमती नदी के किनारे सरोजिनी नायडू का स्मारक बनाया गया। उसके आसपास सुंदर मैदान हैं जहाँ आज भी बच्चे खेलते हैं।

सरोजिनी नायडू की मृत्यु के बाद 3 मार्च 1949 को उन्हें संसद में श्रद्धांजलि दी गई। उस अवसर पर पंडित नेहरू ने लंबा और हृदय को द्रवित करने वाला भाषण दिया। सरोजिनी नायडू

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की मृत्यु के बाद उन्हें जगह-जगह बहुत सी श्रद्धांजलियां दी गईं। उनकी मृत्यु पर शोक सभाओं का आयोजन किया गया। उन शोक सभाओं में राष्ट्र की इस निर्भय बेटी, कवयित्री, शांति की दूत, नारी मुक्ति की जन्मदाता, मित्र, दार्शनिक, आजादी की लड़ाई की योद्धा सिपाही और सच्ची महामानव की मृत्यु पर लोग आंसू बहाते रहे। बुलबुले-हिंद खामोश हो चुकी थी। कूकती हुई कोयल सो चुकी थी।

* * *

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

11

सरोजिनी का व्यक्तित्व

सरोजिनी नायडू बहुत सुंदर नहीं थीं पर उनका व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक था। देखने वाला उनको देखता ही रह जाता था। उनकी आंखें बड़ी-बड़ी थीं। उनसे ऐसा लगता था मानों बहुत कुछ कहने-सुनने की शक्ति उनमें है। उन आंखों को सौंदर्य की परख भी थी। हर खूबसूरत चीज उन्हें अपनी ओर खींच लेती थी। वे उसे देखती रह जाती थीं। उनका माथा चौड़ा था। चेहरा गोल कुछ लंबा सा था। कद बहुत लंबा नहीं था। उनके लंबे काले बाल कमर पर खुले हुए फैले रहते थे। वे ज्यादातर रेशमी खादी की साड़ी पहना करती थीं। बहुत कम बोलती थीं लेंकिन जब बोलती तो ऐसा लगता कि संगीत अपने धीमे स्वरों में बह रहा हो। वे जहाँ भी होती थीं अपने प्रभावशाली और हंसमुख स्वाभाव के कारण अलग ही पहचान ली जातीं। उनको अच्छे कपड़े, विशेषकर रंगीन कपड़े और गहने पहनने का बहुत शौक़ था। वे हाथ भर कर मोटी-मोटी चूड़ियाँ और कड़े पहनती थीं। गले में मालाएँ भी पहनती थीं। उनकों रंगों की पुजारिन भी कहा गया है। उनका व्यक्तित्व इंद्रधनुष की तरह सब को अपनी तरफ खींच लेता था। वह चमकीली गाने वाली चिड़िया की तरह थीं। हर तरफ हंसी-खुशी फैलाने में उनका जवाब नहीं था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरोजिनी नायडू एक संपूर्ण महिला थीं। आजादी की लड़ाई में उन्होंने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उनका योगदान किसी भी पुरुष के योगदान से कम नहीं है। कोमल-कोमल मधुर-मधुर सपनों में रहने वाली यह लड़की अपने गीतों की लड़ियों को पिरोने वाली मालिन, राष्ट्रीय संघर्ष के केंद्र में खिंचती ही चली गई। अन्य ऐसा उदाहरण नहीं मिलता।

सरोजिनी नायडू नयी परंपरा का निर्माण करने वाली महिला थी। जिस समय महिलाएँ घर से बाहर नहीं निकलती थीं उनका पुरुषों से मिलना, उनसे बातचीत करना बुरा समझा जाता था, वे स्वतंत्र रूप से हर जगह जातीं। लेखकों और नेताओं से वे स्वाभाविक रूप से मिलतीं। साहित्यिक और राजनीतिक चर्चाओं में भाग लेतीं।

सरोजिनी नायडू अपने समय की श्रेष्ठ, कुशल वक्ता थीं। यह गुण उन्हें जन्म से ही प्राप्त हुआ था। जब वह बोलना शुरू कर देती थीं तो ऐसा लगता था कि सारी शक्ति उनकी भाषा में, सारा तूफान उनके बोलने में और सारी बुद्धि उनकी आवाज में आ गई है। उनकी भाषण कला की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि सुनने वालों के दिल को वह पूरी तरह छू लेतीं और वह मंत्रमुग्ध होकर सुनते रहते और उनके भाषण में पूरी तरह खो जाते।

वह अपनी शक्तिशाली भाषण कला से स्वयं-सेवकों को जोश दिलातीं और उत्साहित करतीं। सरोजिनी नायडू की आवाज में जाद बात में असर और कहने कहने में ऐसा प्रभाव था कि सुनने वाले सुनते ही रह जाते।

हँसने की आदत सरोजिनी को विरासत में मिली थी। उनके पिता जब हँसते थे तो आसमान सिर पर उठा लिया करते थे। माता-पिता दोनों में ही हास्य और विनोद भरे हुए थे। उस घर में आने-जाने वाले लोग हँसी को महत्व देते थे। सरोजिनी भी हंसी को अनमोल मानतीं। सरोजिनी नायडू की इस हँसी की वजह से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा गांधी के छोटे से दरबार में उन्हें विदूषक कहा जाता था। वह बड़े गंभीर अवसरों पर भी हँसने से बाज नहीं आती थीं। सरोजिनी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह दूसरों पर भी हँसती थीं और कभी-कभी वह अपना भी मजाक उड़ा लिया करती थीं और अपना मजाक कुछ इस तरह से उड़ातीं कि सुनने वाले हिल जाते लेकिन सरोजिनी में कोई हीनता की भावना न आती।

सरोजिनी नायडू कभी-कभी व्यंग्य भरी भाषा का प्रयोग भी करतीं। व्यंग्य भरी तीखी भाषा के प्रयोग की प्रतिभा उनमें थी। इस तरह सरोजिनी अपने ऊपर हँसने, व्यंग्य भरी भाषा के प्रयोग में निपुण थीं। इसी विनोदी स्वाभाव के कारण वे जहाँ भी पहुँचतीं बहुत लोकप्रिय हो जातीं।

सरोजिनी नायडू में सेवा भाव बहुत था। वह बहुत छोटी-सी थीं तभी से उन्होंने सेवा के काम शुरू कर दिए थे। 1908 में हैदराबाद में भयंकर बाढ़ आई थी। तब सरोजिनी नायडू ने हैदराबाद में लेडी हैदरी के साथ मिलकर बाढ़ सहायता के लिए बहुत काम किया था। सरोजिनी ने जब सेवा का व्रत लिया तो समस्त सुख और वैभव-विलास को छोड़ दिया और सार्वजनिक जीवन में एक साधारण महिला की तरह उतर गईं। उन्होंने जीवन भर देश, समाज, महिलाओं और सबकी सेवा की।

सरोजिनी अपने स्वभाव से बहुत उदार थीं। अपनी उदारता के कारण ही वह सेवा के इस काँटों भरे मार्ग पर चली आईं थीं। उनकी उदारता ने प्रादेशिकता, धर्म और सारे संकीर्ण बंधनों को तोड़ दिया था।

वे महान समाज सुधारक थीं। उन्होंने महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए बहुत सी योजनाएँ भी चलाईं। सरोजिनी का युग सुधार-युग कहा जा सकता है। सरोजिनी ने उस सुधार के युग में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ही पूरी तरह से अपने सुधारक होने का परिचय दिया और हर क्षेत्र में सुधार का प्रयास किया।

सरोजिनी भारत की वीरांगना थीं। उनका बचपन खुले वातावरण में बीता था। देश को बचाने में उनका योगदान किसी तरह भी रानी लक्ष्मीबाई से कम नहीं है। वह आजादी की लड़ाई निरंतर पुरुषों की तरह लड़ती रहीं जब तक कि उन्होंने उसे प्राप्त नहीं कर डाला। एक वीरांगना की तरह समस्त कठिनाइयों का सामना वह करती रहीं।

सरोजिनी नायडू एकता की अग्रदूत थीं और विभिन्न धर्मों में, विभिन्न संप्रदायों में एकता लाने का उन्होंने निरंतर प्रयास किया। उन्होंने एक प्रार्थना लिखी जिसमें समस्त धर्मों को कुछ इस तरह से मिला दिया–

अल्लाह हो अकबर, अल्लाह हो अकबर
मस्जिदों मीनार से मुल्लाह बुला रहे हैं।
ऐव मेरिया ऐव मेरिया
श्रद्धानत पादरी हैं वेदी पर गा रहे।
अहुर मज्द, अहुर मज्द
कैसा प्रभावी है गुरु गंभीर अवेस्ता।
नारायण, नारायण
सुनो दिव्य सम्बोधन अनादि अनंत।

उन्होंने जीवन-भर हिंदू-मुसलमान एकता के लिए लड़ाई लड़ी। उन्हें ये दोनों जातियाँ बहुत प्रिय थीं। वे यह चाहती थीं कि हिंदू और मुसलमान इस देश में अलग न हों, निरंतर मिलकर रहें। उन्हें यह भी विश्वास था कि अगर वे कोशिश करें तो दोनों में पूरी तरह एकता स्थापित कर सकती हैं। वे मानती थीं कि भारत के मुसलमान और हिंदू सब एक साथ मिलकर रहे हैं। उन्होंने देश को एक होना सिखाया। मुसलमान भाइयों से एक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

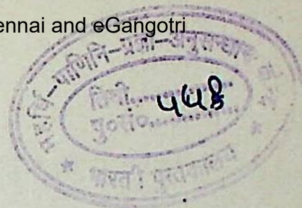
बार उन्होंने कहा, 'मैं अपने मुस्लिम साथियों से निवेदन करूँगी कि वे सीरिया, मिस्र, ईराक और अरब की मुसीबतों की चिंता छोड़ें। मातृ-भूमि भारत के प्रति कर्तव्य निष्ठ और वफ़ादार रहें।'

सरोजिनी नायडू अपनी मित्रता के लिए प्रसिद्ध थीं। उनकी मित्रता बड़ी गहरी और स्नेहमयी होती थी। यह मित्रता अपनी आयु से बड़े और छोटे, सबके साथ हो जाती थी। सरोजिनी अपने मित्रों का पूरा ध्यान रखतीं थीं। उनका सदा यह प्रयास रहता कि उनके मित्रों को उनकी वजह से किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचे।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



12

सरोजिनी के प्रेरणा स्रोत

उनके व्यक्तित्व को बहुत लोगों ने प्रभावित किया। उनमें गोखले, महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, एनी बेसेंट, मुहम्मद अली जिन्ना और जवाहरलाल नेहरू उल्लेखनीय हैं।

गोपाल कृष्ण गोखले

गोखले सरोजिनी की बहुत प्रशंसा करते थे और सरोजिनी भी उनकी प्रशंसक थीं। गोखले ऐसे व्यक्ति थे जिनकी महात्मा गांधी गंगा से तुलना करते थे। सरोजिनी उनको गुरु मानतीं थीं। सन् 1907 से 1915 तक के वर्षों में सरोजिनी नायडू गोखेले के संपर्क में अधिक रहीं। हर मुलाकात में गोखले, सरोजिनी नायडू को बहुत प्रभावित करते थे। वे उनको गुरु की तरह मानती और उनकी बात पर पूरा ध्यान देतीं। गोखले ने सरोजिनी और उनकी आत्मा की आवाज को पहचान लिया था। गोखले बहुत परिश्रमी समाज सेवक थे और सरोजिनी नायडू कल्पनाओं से परिपूर्ण कवयित्री। लंदन में गोखले बीमार थे। वे सरोजिनी के साथ किंगसिंगटन बाग में जाया करते थे। एक बार उन्होंने सरोजिनी से कहा, 'अपने दिमाग का एक कोना मुझे दे दो जिसे मैं अपना कह सकूं।', सरोजिनी ने वास्तव में उनके लिए वह कोना बचाकर रखा था और उसमें गोखले के प्रेरणा देने वाले वचन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने समेट कर रख छोड़े थे। सरोजिनी उनकी बीमारी के समय उनसे मिलने जातीं। गोखले उनको देख कर कहते कि उनको जितनी भी दवाइयाँ दी जाती हैं, उन सब दवाओं से श्रेष्ठ सरोजिनी का आना है। सन् 1915 में गोखले ने यह संसार छोड़ दिया। मरने से कुछ दिन पहले उन्होंने सरोजिनी से कहा, 'मैं नहीं सोचता कि हम फिर मिलेंगे। अगर तुम जिंदा रहती हो तो याद रखो कि तुम्हारा जीवन देश की सेवा के लिए समर्पित है। मेरा काम तो पूरा हो गया।'

जब तक गोखले जिंदा रहे सरोजिनी को बराबर प्रेरित करते रहे। वह उनके कामों की सराहना करने के लिए उनको बराबर चिट्ठी भेजते रहते थे। कभी-कभी उन चिट्ठियों में मीठी फटकार और उपयोगी राय भी होती। वह एक पिता की तरह यह अनुभव करते थे कि यदि उन्होंने सरोजिनी की ज्यादा तारीफ की तो उनको घमंड हो जाएगा। सरोजिनी ने उनसे देश-भक्ति और देश पर अपने आपको बलिदान करने का पाठ सीखा। सरोजिनी पर जिन व्यक्तियों का प्रभाव पड़ा उनमें गोखले सर्वप्रथम हैं। गोखले की मृत्यु पर उन्होंने अंग्रेजी में एक कविता लिखी जिसका शीर्षक था—'याद में'। उस कविता में अपने दिल की गहराई से गोखले के व्यक्तित्व को उन्होंने पूरी तरह उजागर किया। कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं:—

हे सूरमना,
हमारे युग के अंतिम आशा पुरुष,
मोहताज कहाँ तुम,
हमारी प्रेम-प्रशंसा के?
हमारे वज्राहत राष्ट्र का,
पोषण संरक्षण
और रहे उन्नति
उसकी एकता की मणि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस नित्य उपासना में
सिखाया है जो तुमने।

महात्मा गांधी

सरोजिनी नायडू महात्मा गांधी से आयु में 10 वर्ष छोटी थीं। उनकी पहली मुलाकात 1914 में गांधी जी से लंदन में हुई। महात्मा गांधी उस वक्त पूरी तरह महात्मा बन चुके थे। विश्वयुद्ध आरंभ हो गया था। गांधी जी दक्षिणी अफ्रीका से इंग्लैंड पहुँचे थे। विश्वयुद्ध के दिनों में घायलों की सेवा में महात्मा गांधी और सरोजिनी नायडू दोनों सहयोग दे रहे थे। इसी समय गांधी जी के साथ उनकी दोस्ती बढ़ गई। गांधी जी सरोजिनी नायडू को बहुत प्यार करते थे। सरोजिनी भी उनके साथ बहुत बेतकल्लुफ थीं। उनके साथ मजाक भी किया करती थीं। उन्होंने गांधी जी के कई नाम रखे हुए थे। वह उनको 'मिकी माउस' भी कहती थीं। और कभी-कभी 'बौना आदमी' भी। कभी गांधी जी पर व्यंग्य भी बिना किसी हिचक के कर डालती थीं। सन् 1922 में महात्मा गांधी पर मुकदमा चलाया गया। सरोजिनी कचहरी में जाया करती थीं। सरोजिनी को देखकर एक बार गांधी जी ने उनसे मजाक किया, 'तुम मेरे पास बैठो जिससे मुझे सहारा दे सको, यदि मैं टूट जाऊं तो।' और यह कह कर वह हँस पड़े। गांधी जी सरोजिनी को लगातार आज़ादी की लड़ाई लड़ने और महिलाओं को रास्ता दिखाने के लिए प्रेरित करते रहे। गांधी जी ने ही उनको कांग्रेस की अध्यक्षता के लिए भी प्रेरित किया। सरोजिनी ने गांधी जी के आदर्शों के प्रति अपने आपको समर्पित कर दिया। सत्याग्रह आंदोलन में सरोजिनी गांधी जी के साथ जातीं और जगह-जगह भाषण देती थीं। गांधी जी उन पर बहुत विश्वास किया करते थे। वे गांधी जी के लिए प्रेरणा थीं और गांधी जी उनके लिए। उन्होंने गांधी जी के साथ निरंतर आजादी की लड़ाई लड़ी। गांधी जी जब उपवास

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते तो सरोजिनी उनका बराबर ध्यान रखतीं। कभी-कभी उनके अंगरक्षक के रूप में भी काम करतीं। सुबह से शाम तक वे संतरी की तरह उन पर पहरा देतीं।

30 जनवरी 1948 को गांधी जी की हत्या कर दी गई। उससे सारे देश में शोक छा गया। सरोजिनी नायडू को इस समाचार से बहुत सदमा पहुँचा। वे अनेक वर्षों तक उनके साथ रह चुकी थीं। उन्होंने गांधी जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा :

वह जो शांतिदूत था, उसे
एक महान सेनानी के योग्य
संपूर्ण सम्मान के साथ
ले जाया गया है श्मशान भूमि को।
रणभूमि में सेनाओं का नेतृत्व करने वाले
सभी सेनापतियों से कहीं अधिक बड़ा था वह
लघु मानव कहीं अधिक वीर, सबसे महानतम विजेता।

रवीन्द्रनाथ टैगोर

सरोजिनी नायडू का बहुत समय बंगाल में बीता। उस समय सरोजिनी नायडू को टैगोर से मिलने का अवसर मिला। दोनों परिवारों में बहुत मेल था। सरोजिनी नायडू और टैगोर में बड़ी गहरी मित्रता थी। सरोजिनी जब कभी बंगाल जातीं तो टैगोर से जरूर मिलती थीं। टैगोर और सरोजिनी दोनों कवि थे। दोनों में बहुत सी बातें मिलती-जुलती थीं। जिस समय रवीन्द्रनाथ टैगोर का नोबल पुरस्कार प्राप्त काव्य 'गीतांजलि' छपा तो सरोजिनी लंदन में थीं। गीतांजलि के बारे में सरोजिनी का विचार था कि इस रचना ने टैगोर की ख्याति को पश्चिमी देशों में पूरी तरह फैला दिया है।

उन्हें टैगोर के गीत बहुत अच्छे लगते थे। उनको वह प्रायः

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
548

सुना करती थीं। समय के साथ-साथ दोनों में घनिष्टता भी बढ़ती गई । सरोजिनी नायडू ने सन् 1933 ई. में बंबई में रवीन्द्रनाथ टैगोर सप्ताह का आयोजन किया था। टैगोर भी सरोजिनी नायडू कों महान् मानते थे। उनसे स्नेह करते थे। दोनों एक-दूसरे को पत्र लिखा करते थे। उनमें हास-परिहास होता, कभी दार्शनिकता होती और कभी कविता। सरोजिनी उनको 'विश्व कवि' कहकर संबोधित करतीं। अपनी रचनाएँ भेंट स्वरूप देती थीं।

सरोजिनी को ऐनी बेसेंट से बहुत प्रेरणा मिली। वे उनके साथ लंदन गयीं। सरोजिनी सोचती थीं कि एनी बेसेंट विदेशी होकर भारत की आजादी की लड़ाई लड़ रही हैं। हम इस देश में पैदा हुए हैं। इस देश की मिट्टी में खेले हैं। पले बढ़े हुए हैं। हमें तो अपना तन मन धन देश पर लगा देना चाहिए।

मुहम्मद अली जिन्ना और जवाहर लाल नेहरू सरोजिनी नायडू से छोटे थे। दोनों सरोजिनी के मित्र थे। एक दूसरे को प्रेरणा देते थे।

इस तरह सरोजिनी नायडू को अनेक लोगों ने प्रेरणा दी। वे बहुत होशियार थीं। समझदार थीं। राष्ट्र उनके लिए सर्वोपरि था। देश की आज़ादी उनका लक्ष्य था। राष्ट्र की उन्नति उनकी कामना थी। उसके लिए उन्हें जहाँ से भी प्रेरणा मिलती उसे सहर्ष ग्रहण करतीं। देश के लिए उन्होंने अपने पारिवारिक सुख चैन को भी बलिदान कर दिया। देश के लिए उन्होंने अपने आप को अर्पित कर दिया था। आज वे हमारे बीच नहीं हैं। उनके कार्य हमें प्रेरणा देते रहेंगे। भारत के इतिहास में सरोजिनी नायडू का नाम सदा अमर रहेगा।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.